सम्पादकीय
युगगंगोत्री
शान्तिकुञ्ज से ऋषि परम्परा का पुनर्जीवन 2

पूरे देश में गतिशील है वृक्षगंगा अभियान 3,4,5

6 अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह

7 • कैसी हो गर्भवती की दिनचर्या?
• वनवासी गाँवों में महिला मण्डल द्वारा ऑनलाइन प्रशिक्षण

शान्तिकुञ्ज में 11 अगस्त से आरम्भ हो रहे हैं नौ दिवसीय एवं एक मासीय शिविर 8

8 शान्तिकुञ्ज और डॉ. प्रणव पण्ड्या हमारे प्रेरणा पुंज हैं।
- मान. पुष्कर सिंह धामी, मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 अगस्त 2021
वर्ष : 34, अंक : 03
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 27 जुलाई 2021
वार्षिक चंदा : ....₹60/-
वार्षिक चंदा (विदेश) :.....₹ 800/-
प्रति अंक : ....₹ 3/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

राष्ट्र को समर्थ-सशक्त बनाने के लिए
प्रामाणिक, जागरूक, ज़िम्मेदार लोकसेवी संगठन आगे आएँ

परम पूज्य पं.श्रीराम शर्मा आचार्य, वाङ्मय-64 पृष्ठ 2.52-2.55 से संकलित-सम्पादित

अवांछनीयता को निरस्त करने के लिए नैष्ठिक एवं ईमानदार प्रयासों की आवश्यकता है

लोकतन्त्र की सफलता की पहली शर्त है सुदृढ़ नागरिक संगठनों द्वारा नागरिकों का प्रशिक्षण। प्रश्न चाहे मतदाताओं द्वारा प्रतिनिधियों के चुनाव का हो, दलबदलुओं के या भ्रष्टाचारियों के बहिष्कार का हो अथवा उपभोक्ता वस्तुओं की मिलावट को रोकने और शुद्ध चीजों की पूर्ति का हो; केवल जागरूक और जिम्मेदार नागरिक संगठन इनका समाधान प्रस्तुत कर सकते हैं। सरकारी या अर्द्ध-सरकारी संगठन निश्चय ही इस दिशा में कुछ नहीं कर सकते। - **परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य**

ऐसा हम भी कुछ करें

ब्रिटेन में एक सुदृढ़ संगठन है 'उपभोक्ता संघ'। इस संघ के अपने प्रकाशन हैं, प्रयोगशालाएँ हैं और शोध केन्द्र हैं। लन्दन नगर में ही संघ के पाँच लाख से अधिक सदस्य हैं।

संघ की एक मासिक-पत्रिका है-'व्हिच (Which)?' इसके 3 लाख ग्राहक हैं और 30 लाख पाठक। इसके पाठक वे ही वस्तुएँ खरीदते हैं, जिनकी सिफारिश यह पत्रिका करती है। कारण स्पष्ट है, पत्रिका के लिये किसी भी रूप में कोई सरकारी सहायता स्वीकार नहीं की जाती, न उद्योगपतियों या व्यापारियों से कोई विज्ञापन ही। संस्था सरकारी और बाजार के वित्तीय प्रभाव से पूर्णतया मुक्त है। चीजों की किस्मों और नमूनों की जाँच के लिये संस्था की निजी प्रयोगशालायें हैं। व्यवस्थापिका-समिति में अवैतनिक रूप से काम करने वाले वे ही लोकप्रिय विश्वासपात्र लोक-प्रतिनिधि रखे जाते हैं, जिनका उद्योग व्यवसाय में निहित स्वार्थ नहीं होता। इसलिये 'व्हिच' पत्रिका में उपभोक्ता वस्तुओं के बारे में प्रकाशित रिपोर्ट, निर्णय, सुझाव आदि किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रह या दबाव से मुक्त माने जाते हैं। जनता उन पर पूर्ण विश्वास करती है और अपने खर्च किये पैसे के बदले में सुरक्षा और सन्तुष्टि प्राप्त करती है।

गायत्री परिवार अपनी प्रामाणिकता तथा बिना किसी राजनीतिक, आर्थिक अपेक्षा या दबाव के समाज की सेवा करने की भावना के साथ इस दिशा में जनमानस का भरपूर मार्गदर्शन कर सकता है। यदि दवाइयों तथा अन्य पदार्थों के लागत मूल्यों की सही जानकारी व सस्ते प्रभावशाली विकल्पों की जानकारी लोगों को मिलने लगे तो निःसंदेह मुनाफाखोरी पर लगाम लग सकती है और देशी रोज़गार को बढ़ावा मिल सकता है। इसी तरह मिलावट और पदार्थों के विज्ञापन पर होने वाले ख़रच (जो अंततोगत्वा उपभोक्ता की जेब से ही वसूले जाते हैं) के बारे में भी समाज को जागरूक किया जाना चाहिए।

उपभोक्ता संघ का मुख्य उद्देश्य जनता को उपलब्ध चीजों और सेवाओं के बारे में सही राय देकर सहायता पहुँचाना और मार्गदर्शन करना है। बिजली का सामान, दवाएँ, सौन्दर्य प्रसाधन, यन्त्र, वाहन, खाद्य सामग्री, घरेलू सामान से लेकर फोटोग्राफी, बागवानी, नौकरी आदि की घरेलू सेवाओं तक का क्षेत्र इसके अन्तर्गत है। 'व्हिच' के हर अंक में नई चीजों की वैज्ञानिक और तकनीकी जाँच के विवरण छपते हैं। 'यह है अपनी सहायता आप' का एक नमूना।

अवांछनीयताओं की जड़ सुखा देगा संगठित प्रतिरोध

कई अनिवार्य प्रसंगों पर युद्ध और शक्ति की भी आवश्यकता हो सकती है। इसलिए उस प्रयोग को सर्वत्र निरस्त तो नहीं किया जा सकता, किन्तु यह भूल नहीं जाना चाहिए कि संगठित प्रतिरोध का अहिंसक साथ भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। उसमें अवांछनीयताओं की जड़ें सुखा देने की क्षमता है, जबकि कुल्हाड़ी के बल पर मात्र टहनियाँ ही कटती हैं और उनकी फिर से अंकुरित होने की पूरी-पूरी संभावना रहती है।

आत्मविश्वास सबसे बड़ा बल है। आशा की प्रचंड शक्ति का सभी को ज्ञान है। एकाकी व्यक्ति अपने को असहाय अनुभव करता है और जैसा कुछ सामने है, उसी को रोते-कलपते सहन करता रहता है। सामूहिक आन्दोलनों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसके भागीदारों में से प्रत्येक को अपने साथ समूह-शक्ति के होने का आभास मिलता रहता है और यह विश्वास जमता है कि विशाल जनसमुदाय के संगठित प्रयासों से कुप्रचलनों के विरोध में खड़ी की गई बगावत सफल होकर रहेगी।

निहित स्वार्थ अपनी दुरभिसंधियों को कार्यान्वित करने के लिए मूढ़ मान्यतायें फैलाने से लेकर भय और आतंक की साज-सज्जा बनाने तक के अनेक उपायों का अवलम्बन करते रहते हैं। आकर्षक प्रलोभन देकर बलिष्ठ साथियों की मण्डली खड़ी करते हैं। तस्करी, डकैती के कुचक्र ऐसे ही उपाय अपनाकर सफल होते रहते हैं। फिर भी उनमें एक मौलिक दुर्बलता बनी रहती है, जो हर अनुचित कृत्य के साथ जुड़ी रहती है। वह यह है कि अनीति सहन करने की स्थिति में ही वे पनपते और फलते-फूलते हैं। जहाँ सृजनात्मक सतर्कता, आलोचना, विरोध और इन्कार का माहौल बनता है, वहाँ उनके पैर उखड़ने लगते हैं।

जाग्रत् लोकमानस के सम्मुख अवांछनीयताओं को भागते ही बनता है, भले ही वे पिछले दिनों कितनी ही हेकड़ी दिखाती और लूटमार मचाती रही हों। छोटा-सा दीप जल उठे, घर में एक बुढ़िया खाँसने लगे, बच्चे रोने लगें तो भी घुसे हुए बलिष्ठ चोरों को भागने की सूझती है। एक पहरेदार को घूमता देखकर उचक्कों का गिरोह उस क्षेत्र से हटकर अन्यत्र घात लगाने की योजना बनाता है। यह मानवीय मनोविज्ञान छोटे-मोटे आन्दोलनों को भी आशातीत सफलता दिलाता और सत्ताधीशों को झुक कर समझौता करने के लिए विवश करता रहता है। ***

जैसों के साथ तैसा बरतना आवश्यक नहीं

जिस समाज-समुदाय के साथ हमारा सम्पर्क इच्छा या अनिच्छापूर्वक बनता रहता है, उसमें भले-बुरे सभी प्रकार के लोग होते हैं। वे सभी अपने-अपने ढंग से अपना-अपना प्रभाव छोड़ते हैं। इसमें कुछ ग्रहण करने योग्य होते हैं, कुछ त्यागने के योग्य। सभी से पूर्णरूपेण बच सकना अथवा घनिष्ठ बन सकना संभव नहीं।

सज्जनों के साथ सम्पर्क बना रह सके, ऐसे अवसरों की तलाश करते रहने पर कभी न कभी वैसा सुयोग भी मिलता रहता है। ऐसे सम्पर्क थोड़े समय के मिलें, तो भी उससे कुछ न कुछ ऐसा जाना जा सकता है, जो आगे चलकर काम आये। सज्जनों का साथ न मिले, तो कष्ट पीड़ितों की सहायता करने के अवसर खोजे जायें। इसे भी एक प्रकार का सौभाग्य ही मानना चाहिए।

दुष्टजनों का दुर्व्यवहार सहना पड़े तो क्रोध आना और दुःख होना स्वाभाविक है। ऐसी स्थिति का सामना करने के लिये अपना मन उस चिकित्सक जैसा बना लेना चाहिए जिन्हें गंदगी में सने, बेहूदी-बकझक करने वाले और अपशब्दों का प्रयोग करने वाले बालकों, बीमारों से पाला पड़ता है। वे समझते हैं यह इसकी विवशता है। मस्तिष्क ठीक तरह काम न करने के कारण ही उसे अण्ट-शण्ट बकना पड़ रहा है। यदि उनकी मानसिक स्थिति सही रही होती, तो ये भी सभ्यजनों जैसा व्यवहार करते। बुद्धिमान चिकित्सक रोग को भगाने और रोगी को बचाने का प्रयत्न करते हैं, विक्षिप्त रोगियों से भी उनको द्वेष नहीं होता।

अवांछनीय जहाँ भी दीख पड़े, वहीं लड़ाई-झगड़ा आरम्भ कर दिया जाय यह आवश्यक नहीं। असहयोग, उपेक्षा आदि के सहारे भी चला जा सकता है। आवश्यकता पड़ने पर बच्चे द्वारा की जाने वाली उद्दण्डता के अवसर पर धमका देने भर से भी काम चल सकता है। उनके साथ इतना कठोर नहीं होना चाहिए जिसके लिये पीछे पछताना पड़े। दूसरे विवेक खोयें तो इसका अर्थ यह नहीं कि हमें भी अपनी बुद्धिमत्ता खो देनी चाहिए। दण्ड देने की अपेक्षा प्रयत्न इतना ही पर्याप्त है कि उद्दण्डों को डरा देने की, धमकी की कुशल व्यवस्था करके ही काम चलाया जाय। ठगों के साथ स्वयं ठगी की जाय, धूर्तों के साथ स्वयं भी धूर्तता करने की योजना बनायी जाय, यह उचित नहीं। नीतिमत्ता एवं शालीनता जैसे आधार अपनाये जाने पर भी दुर्जनों से निपटा जा सकता है। सज्जनों से तो निकट रहकर ही लाभ उठाना चाहिए।

युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज की स्थापना का स्वर्ण जयन्ती वर्ष

युगगंगोत्री शान्तिकुञ्ज से ऋषि परम्परा का पुनर्जीवन

ऋषि परम्परा मानवीय चेतना के उत्कर्ष से सामर्थ्य के विकास एवं संभानाओं को साकार करने की परम्परा है

गुण, कर्म, स्वभाव, चरित्र, चिन्तन, व्यवहार, विचार, भावनाओं के परिष्कार के साथ आत्मीयता विस्तार की योजना

सम्पादकीय

पश्चिम जगत और हम

हमारी सनातन संस्कृति आज की पाश्चात्य संस्कृति से भिन्न है। पाश्चात्य संस्कृति में जितनी बाहरी चमक-दमक है, उतना ही भीतर अंधकार है। इस संस्कृति ने हमें जितनी सुख-सुविधाएँ प्रदान की हैं, उतना ही मनुष्य को भीतर से कमज़ोर और खोखला भी किया है। कृत्रिम वातावरण में जीने वाला व्यक्ति प्रकृति में ज़रा-से परिवर्तन से परेशान हो जाता है। ऐशो आराम की जिन्दगी ने मनुष्य को जीवन के वास्तविक आनन्द से बहुत दूर कर दिया है। धरती सिमट गई है, लेकिन आपसी दूरियाँ इतनी बढ़ गई हैं कि पड़ोसी को भी नहीं पहचानते, अनजानों से डर लगता है। पाश्चात्य संस्कृति की मान्यता है-

यावज्जीवेत सुखं जीवेत, ऋणं कृत्वा, घृतं पिबेत।

हमारी सनातन संस्कृति इसके ठीक विपरीत है। यह हमें सुविधाभोगी नहीं, बल्कि उपलब्ध संसाधनों का श्रेष्ठतम उपयोग करना सिखाती है। स्वल्प साधनों में भी सुख-संतोष का अनुभव कराती है। ***'वसुधैव कुटुम्बकम्'*** का उद्घोष करते हुए परस्पर आत्मीयता विस्तार के लिए प्रेरित करती है। ***'आत्मवत् सर्वभूतेषु, पर द्रव्येषु लोष्ठवत, मातृवत् परदारेषु'*** जैसे उदात्त आदर्शों पर चलना सिखाती है।

हमारी संस्कृति अध्यात्म प्रधान है। हम सुख के संसाधनों को नहीं, आत्मसत्ता को प्रमुखता देते हैं और इस ब्रह्माण्ड के कण-कण में अपने स्रजेता का विस्तार देखते हैं। मनुष्यमात्र ही नहीं, हर जीव-जन्तु, वृक्ष-वनस्पति हमारे परिवार के सदस्य हैं। संसाधनों को बटोर कर संसार पर राज्य करना हमारा ध्येय नहीं, मानव से महामानव और नर से नारायण तक की यात्रा करना हमारा लक्ष्य है। भारत की सनातन संस्कृति आत्मा के अनन्त विस्तार की यात्रा है। हमारी संस्कृति के अनुसार मनुष्य की आत्मीयता का जितना विस्तार है, जो अपने आदर्शों पर जितना दृढ़ है, जितना तपस्वी और त्यागी है वह उतना ही महान है।

सनातन ऋषि परम्परा

अध्यात्म मार्ग के पथिक की धारणा है ***'यथा ब्रह्माण्डे तथा पिण्डे'***। वैज्ञानिक सिद्धियाँ प्रयोगशालाओं में हासिल होती हैं, लेकिन सनातन संस्कृति के अनुयायी काया की प्रयोगशाला में ही समस्त ब्रह्माण्ड के रहस्यों का उद्घाटन करते रहे हैं। वैज्ञानिक मान्यता है कि मनुष्य औसतन अपनी 7 प्रतिशत शक्तियों का ही उपयोग कर पाता है। हमारी परम्परा इन सुप्त शक्तियों के जागरण, सदुपयोग एवं उनके लोकमंगल में नियोजन की रही है। हम शरीर को भगवान का मंदिर समझकर आत्मसंयम और नियमितता के साथ अपने गुण, कर्म, स्वभाव, संस्कार, विचार, भावनाओं के सतत परिष्कार से उसे आत्मबल सम्पन्न बनाने के लिए प्रयत्नशील रहे हैं। सामान्य व्यक्ति इस परम्परा का अवलम्बन करते हुए जहाँ सीमित साधनों में भी परस्पर प्यार, सहकार के साथ असीम आनन्द का अनुभव करता है, वहीं ज्ञानार्जन की दृष्टि से समाज का सर्वोच्च वर्ग ब्रह्माण्ड के रहस्योद्घाटन के साथ-साथ मानवीय उत्थान के सूत्र तलाशता रहा है और उनसे समाज को निरंतर लाभान्वित करता रहा है। लोकमंगल के लिए इन कार्यों में अपना जीवन खपा देने वाली सर्वोच्च मनीषा 'ऋषि' कहलाती है। ऋषि वह होते हैं जो तमाम सुखोपभोग को त्यागकर प्रचण्ड तप, संयम के बल पर अलौकिक सिद्धियाँ हासिल करते हैं।

भारतवर्ष में उपासना, साधना, संयम, सेवा, संस्कार, योग, यज्ञ, प्राणायाम, ध्यान जैसे मानवीय काया में देवत्व का विकास करने वाले और धरती पर स्वर्ग की सृष्टि करने वाले सूत्र इन्हीं ऋषि-मुनि, गुरु-ज्ञानियों की देन है। वेद, वैदिक गणित, ज्योतिष विज्ञान, आयुर्वेद जैसी अनेक विद्याओं का प्रादुर्भाव इन्हीं ऋषियों द्वारा मानवीय काया की प्रयोगशाला में ही हुआ। उन्हीं के तपोबल के प्रभाव से प्रकृति अपना राज खोलती गई और जीवन के उत्थान के बहुमूल्य सूत्र प्रदान करती गई। यही हमारी ऋषि परम्परा रही है, जिसका उपयोग न केवल भारतवासियों ने किया, बल्कि इस सनातन संस्कृति ने सारे विश्व का मार्गदर्शन किया और आज भी कर रही है।

युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी

दुर्भाग्य कहें या भारत पर अपना अधिकार जमा बैठे आक्रान्ता देशों की साजिश; कालांतर में हमारे समाज में स्वार्थ, अंधविश्वास, मूढ़मान्यताएँ बढ़ती गईं। ऋषि परम्परा विलुप्त-सी हो चली थी। बिना किसी सोच-विचार के मान्यताओं और परम्पराओं का अंधानुकरण होने लगा। आडम्बरों ने धर्म-अध्यात्म का चोला पहन लिया। हर तथ्य को वैज्ञानिक प्रयोग-परीक्षणों के बाद अपनाने वाले विज्ञान को आडंबरों पर विश्वास कैसे होता? परिणामस्वरूप हमारा देश सपेरों और मदारियों का देश कहा जाने लगा। नीति, मर्यादा, अनुशासन सब तार-तार होने लगे। मनुष्य के स्वच्छन्द और उच्छृंखल व्यवहार ने मानवीय अस्तित्व पर ही प्रश्न चिह्न खड़ा कर दिया।

ऐसी प्रतिकूलताओं के समय गीताकार ने अपना ***'यदा-यदा हि धर्मस्य ....'*** का आश्वासन दोहराया। एक 15 वर्षीय किशोर 'श्रीराम' ने धर्म के अभ्युत्थान के लिए अपने गुरुदेव स्वामी सर्वेश्वरानन्द जी की आज्ञा शिरोधार्य की। उन्होंने अपने प्रचण्ड तपोबल से भारत की सनातन ऋषि परम्परा को तमाम आडम्बरों, मूढ़मान्यताओं से मुक्त कर सारे विश्व में प्रतिष्ठित किया। तप और ज्ञान के आधार पर सारी मानवता का पथ प्रदर्शन करने वाले युगऋषि पं.श्रीराम शर्मा आचार्य सारे विश्व में प्रतिष्ठित हो गए।

युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी अपनी आत्मकथा 'हमारी वसीयत और विरासत के दूसरे अध्याय का शुभारम्भ करते हुए लिखा है-

"हमारे जीवन का पचहत्तरवाँ वर्ष पूरा हो चुका। इस लम्बी अवधि में मात्र एक काम करने का मन हुआ और उसी को करने में जुट गए। वह प्रयोजन था 'साधना से सिद्धि' का अन्वेषण-परीक्षण। इसके लिए यही उपयुक्त लगा कि जिस प्रकार अनेक वैज्ञानिकों ने पूरी-पूरी जिन्दगियाँ लगाकर अन्वेषण कार्य किया और उनके द्वारा समूची मानव जाति की सेवा सम्भव हो सकी, ठीक उसी प्रकार देखा जाना चाहिए कि पुरातन काल से चली आ रही 'साधना से सिद्धि' की प्रक्रिया का सिद्धान्त सही है या ग़लत। इसका परीक्षण दूसरों के ऊपर न करके अपने ऊपर किया जाय।"

सभी ऋषियों ने अलग-अलग विषयों पर शोधकार्य किए हैं और अपने-अपने समय की अवांछनीयताओं को दूर करने के लिए व आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कार्यक्रम चलाए। परम पूज्य गुरुदेव **"वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के जनक"** हैं। इन दिनों अध्यात्म को सही सिद्ध करने के लिए उसे विज्ञान की कसौटी पर सही प्रमाणित करना आवश्यक था। उन्होंने 'गायत्री एवं यज्ञ' अर्थात् सद्विवेक तथा वह प्राणशक्ति जो संजीवनी की तरह हताश-निराश, मूर्छित मानवता में नवप्राणों का संचार करने वाली जीवन साधना तथा सद्ज्ञान को सत्कर्म में परिणत करने की प्रेरणा को अपने जीवन से प्रमाणित किया और एक विराट विश्वव्यापी अभियान के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया। वे कहते रहे कि अध्यात्म मानवीय उत्थान के लिए आवश्यक उच्च कोटि का विज्ञान है। हमारे ऋषियों ने अपने जीवन की सिद्धियों के रूप में जो सूत्र-सिद्धान्त आर्षग्रंथों में लिखे हैं वे सब सोलह आने सत्य हैं, बशर्ते उनका धैर्यपूर्वक और एकनिष्ठ होकर प्रयोग किया जाय। वाङ्मय खण्ड 1 के पृष्ठ 7.1 पर वे लिखते हैं-

हमारी जीवनगाथा सब जिज्ञासुओं के लिए एक प्रकाश स्तंभ का काम कर सकती है। वह एक बुद्धिजीवी और यथार्थवादी द्वारा अपनाई गई कार्य-पद्धति है। छद्म जैसा कुछ उसमें है नहीं, असफलता का लांछन भी उन पर नहीं लगता। ... आत्मविद्या और अध्यात्म विज्ञान की गरिमा से जो प्रभावित हैं, उनका पुनर्जीवन देखना चाहते हैं, प्रतिपादनों को परिणतियों की कसौटी पर कसना चाहते हैं, उन्हें निश्चय ही हमारी जीवनचर्या के पृष्ठों का पर्यवेक्षण संतोषप्रद और समाधानकारक लगता है।"

जीवन योग का विशिष्ट प्रयोग

आज शारीरिक से लेकर मानसिक और आत्मिक कष्ट-कठिनाइयों से प्रायः हर व्यक्ति गुज़र रहा है। परिवार टूट रहे हैं, समाज बिखर रहा है। कभी ग़रीब व्यक्ति साहूकारों के ब्याज और मुनाफ़ाखोरी के बोझतले दबता-पिसता रहता था, आज जिन्हें समाज कभी भगवान का दर्जा दिया करता था उन डॉक्टरों और हॉस्पिटलों के बिल से दम तोड़ रहा है। आज बड़े-बड़े दाँत वाले दानव नशा, ग़रीबी, भुखमरी, अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार, आतंक, मुनाफ़ाखोरी के रूप में मुँहबाये खड़े हैं। पर्यावरण, जल का अभाव, जनसंख्या वृद्धि, विश्वयुद्ध जैसे संकट इतने विकराल हो गए हैं कि उनके समक्ष मानवीय प्रयास अत्यंत बौने दिखाई देते हैं।

समाधान एक ही है-ऋषि परम्परा का अवलम्बन। भोग नहीं, तप और योग की परम्परा का विस्तार।

आज परिस्थितियाँ अत्यंत प्रतिकूल हैं। पहले जैसा साधना का वातावरण नहीं है और ना ही पर्याप्त समय-साधन। सर्वोत्तम उपाय यही है कि अपनी परिस्थितियों में जितना भी संभव हो युगऋषि के तप और ज्ञान का लाभ उठाया जाय और अपने जीवन को ऋषि परम्परा के अनुरूप ढालने का प्रयास किया जाय। धर्म-अध्यात्म के पथ पर चलते हुए हम अपने जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन ला सकते हैं।

युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने न केवल सारे विश्व में ज्ञान की गंगा प्रवाहित की, अपितु अपनी तपोभूमि शान्तिकुञ्ज, जिसकी इस वर्ष हम स्वर्ण जयन्ती मना रहे हैं, से उन सभी प्राचीन ऋषियों की परम्परा को पुनर्जीवित भी किया, जिनके सूत्र-सिद्धान्तों का समुच्चय ही भारत की सनातन संस्कृति है। इस संदर्भ में विशेष आलेख अगले किसी अंक में दिया जाएगा।

शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयन्ती

शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयन्ती का यह वर्ष वस्तुतः ऋषि परम्परा की स्वर्ण जयन्ती का वर्ष भी है। पूज्य गुरुदेव अपनी लेखनी से कई बार स्पष्ट कर चुके हैं कि उनकी हिमालय यात्रा के समय देवात्मा हिमालय में सूक्ष्म शरीर में निवास करने वाले अनेक ऋषिगणों से साक्षात्कार हुआ। उनके आग्रह पर पूज्य गुरुदेव ने शान्तिकुञ्ज से भगीरथ, परशुराम, चरक, विश्वामित्र, वशिष्ठ आदि अनेक ऋषियों की परम्परा को पुनर्जीवित किया। इन प्रयासों और उनकी उपलब्धियों का वर्णन अगले अंक के सम्पादकीय में किया जाएगा, लेकिन स्वयं परम पूज्य गुरुदेव ने ऐसे कई सूत्र हमें दिए हैं जिनका अवलम्बन करने से समाज का हर व्यक्ति प्रभावशाली ढंग से ऋषि परम्परा को अपनाकर समाज का कायाकल्प कर सकता है।

हमारे जीवन से सीखें

युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव लिखते हैं-

जिन्हें ऋषि परम्परा के अध्यात्म का स्वरूप समझना हो, उन्हें निजी अनुसंधान करने की आवश्यकता नहीं है। वे हमारी जीवनचर्या को आदि से अन्त तक पढ़ और परख सकते हैं।

हमारे क्रिया-कृत्य सामान्य हैं, पर उसके पीछे उस पृष्ठभूमि का समावेश है जो ब्रह्मतेजस को उभारती और उसे कुछ महत्त्वपूर्ण करने की समर्थता तक ले जाती है।

परम पूज्य गुरुदेव के ऋषितुल्य जीवन का नवनीत माने जाने वाले बहुमूल्य सूत्र-सिद्धांत एक सामान्य से लेकर अति विशिष्ट व्यक्ति तक के जीवन का कायाकल्प करने में समर्थ हैं। उनकी चर्चा अगले अंक में होगी। वर्तमान युग में अवांछनीयताओं के निवारण और जीवन की सभी समस्याओं के समाधान के लिए ऋषि संस्कृति को घर-घर में प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता है।

जीवन में सरलता, कठिन परिस्थितियों में धैर्य और दूसरों के प्रति सद्भावपूर्ण सहानुभूति; ये तीनों मानव जीवन की बहुमूल्य विभूतियाँ हैं।

वृक्षगंगा अभियान : मध्य प्रदेश में वृहद् स्तर के योजनाबद्ध बड़े कार्यक्रम

10 दिनों में 5 कार्यक्रम, 2082 पौधे रोपे

महिला मण्डल का दैनिक तुलसी रोपण अभियान तथा बांदरी में वृक्षारोपण से पूर्व शोभायात्रा

सागर। मध्य प्रदेश

सागर स्थित माँ भगवती महिला मंडल, माँ गायत्री महिला मंडल व माँ आद्यशक्ति महिला मंडल की बहिनों के विशेष सहयोग से सागर में वृक्षारोपण अभियान पूरे जोश और उत्साह के साथ जारी है। वृक्षारोपण अभियान के प्रभारी डॉ. अनिल खरे के नेतृत्व में स्थानीय युवाओं की वृक्षारोपण टोली आए दिन सामूहिक कार्यक्रम आयोजित कर रही है। 2 जुलाई से 11 जुलाई तक पाँच कार्यक्रम आयोजित हुए, जिनमें 2000 से अधिक पौधे रोपे जा चुके हैं।

शासकीय हाईस्कूल हिलगन में 51पौधे रोपे गए व शाला द्वारा 251 पौधे रोपने का संकल्प लिया गया।

राजपूत डेयरी ग्राम बदोना में स्व. श्री वी.पी. पाठक की पुण्य तिथि पर उनके बड़े पुत्र अखिलेश पाठक के सौजन्य से 75 पौधे रोपे गए।

मालथौन शाखा द्वारा शासकीय हायर सेकण्ड्री स्कूल बांदरी में वृक्षारोपण से पूर्व पौधों की शोभायात्रा निकाली गई। वहाँ 86 पौधे रोपे गए। विद्यालय कर्मी तथा स्थानीय गायत्री परिवार ने 84 पौधे और लिए तथा उन्हें सुरक्षित स्थानों पर लगाने का आश्वासन दिया।

शासकीय हाईस्कूल बरौदा में स्थानीय 'दिया' शाखा के युवाओं के सहयोग से 125 पौधों का रोपण किया गया व 151 पौधे रोपित करने का संकल्प कराया गया।

गायत्री परिवार सागर एवं नगर निगम सागर के संयुक्त तत्वावधान में मोतीनगर सागर में मियावाकी पद्धति से 1200 पौधों का रोपण किया गया। 11 जुलाई को डॉ. आर.पी. यादव के फार्म हाउस सीहोरा में 56 पौधे लगाए गए।

1100 घरों में तुलसी रोपण

माँ भगवती महिला मंडल, माँ गायत्री महिला मंडल व माँ आद्यशक्ति महिला मंडल संचालिका श्रीमती रेखा गुप्ता श्रीमती कंचन उपाध्याय, श्रीमती गायत्री गुप्ता सहित मण्डल की सभी बहिनों ने शहर में 1100 तुलसी की पौध घर-घर लगाने का अभियान चला रख है। यह अभियान लगभग प्रतिदिन चल रहा है। जिनके घर तुलसी की पौध लगाई जाती है उन्हें कम से कम एक अन्य पेड़ लगाने की प्रेरणा भी दी जाती है।

श्रीराम स्मृति उपवन में रोपे 2100 पौधे

कोलवा, मंदसौर। मध्य प्रदेश

27 जून 2021 को ग्राम कोलवा में गायत्री परिवार ने लॉयन्स क्लब के संग वृहद् वृक्षारोपण का कार्यक्रम आयोजित किया। इस पौधरोपण कार्यक्रम में नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा तथा पर्यावरण विभाग के मंत्री श्री हरदीप सिंह डंग ने भी भाग लिया। इस आयोजन में कुल 2100 वृक्षों की पौध लगाई गई। मंत्री महोदय ने कहा कि कोरोना काल में हुई ऑक्सीजन की कमी ने सभी को ऑक्सीजन और पर्यावरण की जीवन में उपयोगिता भली भाँति समझा दी है।

पर्यावरण विभाग के मंत्री श्री डंग ने जल संरक्षण की ओर भी लोगों का ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने कहा कि पर्यावरण यदि शरीर है तो जल उसकी आत्मा है। श्री डंग ने प्रदेश सरकार की आगामी सीड बम योजना के बारे में भी बताया। गायत्री परिवार की सेवाओं की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन को बढावा देना हमारा कर्तव्य है।

> पर्यावरण शरीर है तो जल उसकी आत्मा। - **पर्यावरण मंत्री, म.प्र.**

कार्यक्रम को संतश्री मिथलेश नागर जी, गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ के प्रदेश प्रभारी श्री विवेक चौधरी सहित गायत्री परिवार एवं समाज के अनेक वरिष्ठ महानुभावों ने भी सम्बोधित किया। कार्यक्रम का उद्देश्य एवं अभियान का परिचय जिला समन्वयक श्री मोहनलाल जोशी ने दिया एवं संचालन श्री केशव शिंदे ने किया। सुश्री निशा एवं नम्रता तथा राजीव एवं राकेश धनोतिया ने प्रज्ञा गीत प्रस्तुत किये।

> गायत्री परिवार मंदसौर के मुख्य ट्रस्टी श्री नरेश त्रिवेदी ने अपनी दिवंगत पत्नी की स्मृति में पौधे उपलब्ध कराए।

लक्ष्य : 11,000

गायत्री परिवार द्वारा कोलवा की पहाड़ी पर श्रीराम स्मृति उपवन का निर्माण करा कर उसमें 11 हजार वृक्षों का रोपण एवं संरक्षण का लक्ष्य रखा गया है। इस स्मृति उपवन में वर्ष 2019 में 551 पौधे, वर्ष 2020 में 1100 पौधे एवं वर्तमान वर्ष 2021 में 2100 पौधों का रोपण किया गया।

एक पंथ दो काज : हरीतिमा संवर्धन के साथ ऋषियों की पावन परम्परा का स्मरण कराने से बढ़ी आस्था

शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष की विशेष योजना

बुरहानपुर। मध्य प्रदेश

युवा प्रकोष्ठ मध्य प्रदेश ने इस वर्ष वृक्षगंगा अभियान के अन्तर्गत विशेष अभियान चलाया है। शान्तिकुञ्ज की स्थापना की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में इस योजना में ऋषि परम्परा को भी जोड़ा गया है। विभिन्न ऋषियों के जीवन से सम्बन्धित रहे स्थान विशेष और उनसे सम्बन्धित वृक्षों का चयन कर यह योजना बनाई गई है और तद्नुसार लोगों को समारोहपूर्वक वृक्षों की पौध लगाने के लिए प्रेरित-प्रोत्साहित किया जा रहा है।

इसके अलावा घर-आँगन में चरक वाटिकाएँ (औषधीय उपयोग के पौधे), घर की छतों पर ऋषि जमदग्नि वाटिकाएँ (सब्ज़ी और मसालों के पौधे) आदि लगाने का अभियान भी चल रहा है। युवा प्रकोष्ठ मध्य प्रदेश के अभियान संयोजक श्री मनोज तिवारी ने बताया कि आस्थाओं के स्पर्श से हरीतिमा संवर्धन के प्रति जनमानस की रुचि कई गुना बढ़ जाती है।

ऋषि, उनकी विशेषता एवं उपयुक्त स्थान तथा सम्बन्धित वृक्ष

1. **कश्यप ऋषि** : (ग्राम चौपाल में, भगवान श्रीराम से संबंध) सीता अशोक, पीपल, पंचवटी
2. **वशिष्ठ ऋषि** : (साधना) आम, पीपल, वटवृक्ष, पाकड़, आँवला
3. **गौतम ऋषि** : (शिव आराधना) बेलपत्र
4. **विश्वामित्र ऋषि** : (सुरक्षा वाले) नीम, इमली, खैर, गुग्गुल, करंज, बबूल, बाँस
5. **याज्ञवल्क्य ऋषि** : (देवालयों में, यज्ञ की समिधा वाले) पीपल, पलाश, पाकड, बरगद, गुलर, बेलपत्र, आक, गीलोय, अदरक, हल्दी, आज्ञाघास
6. **संदीपनी ऋषि** : (विद्यालयों में, गुरू-शिष्य परम्परा से सम्बन्धित) : कदम्ब, पारिजात, अमलतास, आँवला, विघा, मीठा नीम, मधुगामीनी।

8 **जमदग्नि ऋषि** : (खेतों की मेंड़ पर, कृषि में उपयोगी) सहजन, अंजन, आम, जाम, सीताफल, करोंदा, कटहल

गायत्री धाम का विशिष्ट योगदान

सैंधवा, बड़वानी। मध्य प्रदेश

यह योजना गायत्री धाम, सेंधवा (जिला बड़वानी) द्वारा भी इसी प्रकार की योजना चलाई जा रही है। उनके द्वारा अलग-अलग पर्वों पर एक-एक ऋषि के नाम पर निर्धारित स्थलों पर वृक्षारोपण का कार्यक्रम चलाया जा रहा है।

शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती उपवन का शुभारम्भ

नीलेश सरोवर सहित अनेक स्थानों पर वृक्षारोपण किया

इंजीनियरिंग कॉलेज प्रांगण में शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ति उपवन स्थापना समारोह

उज्जैन। मध्य प्रदेश

उज्जैन में वृक्षगंगा अभियान का शुभारंभ विश्व पर्यावरण दिवस-5 जून से ही हो गया। इसके अन्तर्गत 11 जुलाई को इंजीनियरिंग कॉलेज उज्जैन के प्रांगण में समारोहपूर्वक शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती उपवन की स्थापना की गई।

जिले का प्रथम सामूहिक वृक्षारोपण आयोजन ग्राम कनासिया में रविवार 27 जून को हुआ, जहाँ उस दिन 50 और अगले दो दिनों में 50 और पौधे रोपे गए। ये पौधे सरस्वती उच्चतर माध्यमिक विद्यालय प्रांगण तथा स्थानीय श्मशान में लगाए गए हैं। जून माह तथा जुलाई के प्रथम सप्ताह में ही तहसील खाचरोद, नागदा और महिद्पुर में वृक्षारोपण आरंभ हो गया।

उज्जैन इंडस्ट्रियल एरिया के नवनिर्मित नीलेश सरोवर में आयोजित सामूहिक वृक्षारोपण में भी गायत्री परिवार ने प्रमुख भूमिका निभाई। उल्लेखनीय है कि 2 वर्ष पहले ही इस सरोवर को विकसित किया गया है, जिसमें गायत्री परिजनों ने खूब श्रमदान किया था।

जून माह में शहर में 150 गिलोय के पौधे बाँटे गए। 108 बिल्व की पौध व अन्य धार्मिक महत्व के पौधे स्थानीय मंदिरों में ट्री-गार्ड सहित लगाए गए।

तरुपुत्र महायज्ञ : रोपे 651 पौधे

बुरहानपुर। मध्य प्रदेश

13 जुलाई को ग्राम फोपनार में श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर की पहाड़ी 'त्रिवेणी पर्वत' पर तरुपुत्र रोपण महायज्ञ आयोजित कर 651 पौधे रोपे गए। बरसती बूँदों के बीच पर्यावरण प्रेमियों ने बड़े उत्साह के साथ मौलश्री, शीशम, बड़, पीपल, नीम, आंवला, जामुन, शमी, सीताफल आदि के पौधे लगाए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि बुरहानपुर एसडीएम श्री काशीनाथ बडोले, जनपद सीईओ श्री के.के. खेडेकर, जिला शिक्षा अधिकारी श्री रविंद्र महाजन व बीजेपी के जिला अध्यक्ष श्री मनोज लाघवे उपस्थित हुए। इस अवसर पर 11 वर्ष पूर्व लगाई गई 1008 त्रिवेणियों को पालने-पोसने वाली श्री लक्ष्मी नारायण वृक्ष गंगा अभियान समिति ग्राम फोपनार के सर्वश्री जयकुमार जैन, दिगंबर महाजन, धीरज प्रजापति, बाडूभाई माली, संतोष पंडित, अनिल पाटिल के साथ बड़ी संख्या में ग्रामीण व गायत्री परिवार के सदस्य उपस्थित थे।

त्रिवेणी पर्वत पर वृक्षारोपण का मनमोहक दृश्य

भावविभोर कर देने वाला था 1008 त्रिवेणियों से तरुमिलन

इस स्थान पर 11 वर्ष पूर्व रोपित 1008 त्रिवेणी (बड़, पीपल, नीम) को उनके रोपणकर्त्ताओं ने गले लगाया। तरुमिलन का कार्यक्रम गायत्री धाम सेंधवा के श्री मेवालाल पाटीदार ने सम्पन्न करवाया। उन्होंने कहा कि जीवन से लेकर मरण तक हमारी सम्पूर्ण जीवन यात्रा वृक्षों से जुड़ी है। हर व्यक्ति को जीवन में कम से कम तीन पूर्ण विकसित पेड़ों जितनी प्राणवायु और लकड़ियों की आवश्यकता होती है, जिसकी व्यवस्था उसे जीते-जी ही कर लेनी चाहिए।

100 गाँवों में केशर आम के 5000 पौधों का रोपण

सैंधवा, बड़वानी। मध्य प्रदेश

म.प्र. व महाराष्ट्र के गाँव होंगे लाभान्वित

सेंधवा शाखा द्वारा इस वर्ष बड़वानी, खरगोन, धार और धुलिया (महाराष्ट्र) के 100 गाँवों में किसानों को केशर आम की उत्तम किस्म की 5000 पौध वितरित करने का कार्यक्रम है। यह पौध इन जिलों में गुरुपूर्णिमा, हरियाली अमावस्या, तुलसी जयन्ती और रक्षाबन्धन के दिन वितरित की और रोपी जायेंगी। 1000 हज़ार परिजनों से 5-5 आम की पौध का अनुदान लेकर उपरोक्त जिलों के 5000 किसानों को इन्हें निःशुल्क दिया जाएगा।

हरीतिमा संवर्धन के इस पुनीत कार्य में सभी सहयोगियों तथा लाभार्थी किसानों को श्रद्धेय जीजी एवं श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी द्वारा हस्ताक्षरित अभिनन्दन पत्र भी प्रदान किए जा रहे हैं।

दर्द एक जैसे होते हैं, लेकिन हौसले सबके अलग-अलग होते हैं। कोई डर कर बिखर जाता है तो कोई संघर्ष करके निखर जाता है।

वृक्षगंगा अभियान : युगसृजेताओं का अरमान हराभरा बने अपना राजस्थान

जिले के 35 प्रमुख तीर्थ-देवालयों को दी 11,000 औषधीय वृक्षों की पौध

डूंगरपुर। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ सागवाड़ा द्वारा डूंगरपुर जिले के प्रमुख 35 देवालयों को निःशुल्क औषधीय प्रजाति के पौधे भेंट किए गए। उप जिला वन अधिकारी सुपोंग शशि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। नगरपालिका अध्यक्ष श्री नरेन्द्र खोड़निया ने अध्यक्षता की।

श्री सुपोंग शशि ने आने वाले दिनों में ग्राम पंचायतों के माध्यम से अश्वगंधा, गिलोय एवं तुलसी की पौध वितरण की योजना की जानकारी दी।

खड़गदा में आयोजित समारोह को सम्बोधित करते उप जिला वन अधिकारी सुपोंग शशि

नगरपालिका अध्यक्ष ने गायत्री परिवार द्वारा कॉलेज परिसर सागवाड़ा में 500 पीपल लगाने के संकल्प का स्वागत किया। उन्होंने इनके लिए ट्री-गार्ड उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया। सागवाड़ा की 11 बैंकों ने भी ट्री-गार्ड देने का आश्वासन दिया है।

गायत्री परिवार की ओर से उपजोन समन्वयक श्री शिवराम कलाल ने गायत्री परिवार के वृक्षगंगा अभियान की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि इस योजना के अन्तर्गत गतवर्ष जिले के विद्यालयों में 7,000 पौधों का रोपण किया गया था। इस वर्ष देवालयों और चिकित्सालयों को कदम, पारिजात, नीम, अर्जुन, बहेड़ा, आंवला, रुद्राक्ष, कल्पवृक्ष, गनियारी, सिंदूरी, पारस पीपल, इत्यादि के 11,000 पौधे दिए जा रहे हैं।

श्री दीपक जोशी ने बताया कि ये पौधे अच्छी किस्म के हैं। इन्हें गुजरात में सापुतारा, नवसारी, चीखली, वलसाड़ आदि क्षेत्रों से मँगाया गया है।

प्रमुख लाभार्थी तीर्थ-देवालय

गोरेश्वर, नीलकंठ वाटेश्वर, ईश्वर सलालेश्वर, बेणेश्वर धाम, हरि मंदिर, आशापुरा विजवा माता, कटकेश्वर, कमलेश्वर, सरोदा नीलकंठ अंधेरी माता विराट आदि।

उपखंड अधिकारी सागवाड़ा, तहसीलदार सागवाड़ा, नगरपालिका के उपाध्यक्ष, मुख्य प्रबंधक रोडवेज आदि अनेक गणमान्य तथा मेसर्स लार्सन एंड टूब्रो कंपनी जैसे सहयोगी प्रतिष्ठान व लाभार्थी देवालय प्रबंध समिति के प्रमुख उपस्थित थे। गायत्री परिवार की ओर से सर्वश्री नारायणलाल पण्ड्या, लक्ष्मी शंकर पाटीदार, तुलसीराम व्यास, रमन लाल पाटीदार, कृष्णलाल जोशी, शिवराम कलाल, दीपक जोशी आदि ने आयोजन में विशिष्ट योगदान दिया।

ढूंढ़ नदी उद्गम स्थल पर लगाए पौधे

जयपुर। राजस्थान

गायत्री परिवार जयपुर ने ढूंढ नदी को पुनर्जीवित करने के लिए वृहद् स्तर पर वृक्षारोपण किया है। सीकर रोड स्थित ट्रांसपोर्ट नगर के पास भूरी डूंगरी (उद्गम पहाड़ी) पर पहले भी हजारों पेड़ लगाए गए हैं जो अच्छे खासे विकसित हो चुके हैं। इस वर्ष भी जून के अंतिम सप्ताह में सैकड़ों पौधे लगाए गए। 8 से 10 फीट की ऊँचाई तक विकसित बरगद पीपल और जामुन के पौधे लगाए गए हैं।

कार्यक्रम आध्यात्मिक वातावरण में पौधों की पूजा करने व कलावा बाँधने के साथ शुरू हुआ। सर्वश्री शक्तिपीठ ब्रह्मपुर के व्यवस्थापक श्री रणवीर सिंह चौधरी, प्रमुख कार्यकर्ता सर्वश्री ओमप्रकाश अग्रवाल, सतीश भाटी, डॉ. प्रशान्त भारद्वाज, भैंरूलाल जाट, विष्णु गुप्ता आदि ने वृक्षारोपण किया, ट्री-गार्ड लगाए।

आदर्श : अनूठा सेवानिवृत्ति समारोह

पुलिस प्रशिक्षण केन्द्र में आयोजित किया वृक्षारोपण समारोह

भरतपुर। राजस्थान

राजस्थान पुलिस सेवा के अधिकारी, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक भरतपुर, श्री जगमाल सिंह गुर्जर ने कल 30 जून 2021 को अपनी सेवा निवृत्ति का समारोह अलग ही तरीके से मनाया। उन्होंने अपने वर्तमान पदस्थापन स्थल, पुलिस प्रशिक्षण केन्द्र बांसी, जिला भरतपुर में गायत्री परिवार कुम्हेर, नदबई एवं भरतपुर के सहयोग से प्रशिक्षण केन्द्र परिसर में बरगद, पीपल, नीम आदि के पौधे लगवाये। गायत्री परिवार द्वारा श्री जगमाल सिंह गुर्जर का सम्मान किया गया एवं सभी पुलिस प्रशिक्षण केन्द्र के कर्मचारी एवं जवानों को सत्साहित्य वितरित किया गया।

श्री जगमाल सिंह गुर्जर गायत्री शक्तिपीठ कुम्हेर के माध्यम से गायत्री परिवार से जुड़े हैं। वे अपने सेवा काल में जहाँ भी पदस्थापित रहे, गायत्री परिवार के कार्यक्रमों में भाग लेते और भरपूर सहयोग करते रहे।

पूजन, प्रेरणायुक्त यह कार्यक्रम पूरी तरह से आध्यात्मिकता और वृक्षों के प्रति आस्था बढ़ाने वाला था। कुम्हेर के श्री श्यामसुन्दर शर्मा, भरतपुर उपजोन प्रभारी श्री श्याम सिंह जी, नदबई के श्री रवि सिंह इन्दोलिया एवं भरतपुर के श्री देवेन्द्र पराशर प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

निवर्तमान पुलिस अधिकारी को सम्मानित करते श्री रविसिंह इंदौलिया और श्री श्याम सिंह

महिला मण्डल का वृक्षारोपण अभियान

भीलवाड़ा। राजस्थान

11 जुलाई को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खेराबाद में गायत्री शक्तिपीठ महिला मंडल भीलवाड़ा की ओर से वृक्षारोपण का कार्यक्रम आयोजित हुआ। गायत्री परिवार की सरोजना व्यास, सरिता जैन, मंजू सोनी, सीमा चौधरी व विद्यालय की प्रधानाचार्य चंद्रप्रभा चुंडावत ने पौधों का पूजन और महामृत्युंजय मंत्र बोलते हुए समस्त विश्व में स्वच्छ पर्यावरण व स्वस्थ जीवन की प्रार्थना की। इस अवसर पर पूरा विद्यालय परिवार, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता व ग्राम पंचायत सहायक उपस्थित थे। महिला मंडल की नीलम शर्मा, मधु गुप्ता, सरिता गुप्ता, प्रज्ञा युवा मंडल के डॉ राधेश्याम श्रोत्रिय, मुकेश सोनी आदि का विशेष सहयोग रहा।

अंसल सुशांत सिटी, राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय बापू नगर भीलवाड़ा, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय बोरडा, दलेर सिंह जी का खेड़ा, भदाली खेड़ा में भी वृक्ष लगाए गए।

वृक्षगंगा अभियान के अन्तर्गत हो रहा है भागीरथी पुरुषार्थ

पाँच वर्ष में 35000 वृक्ष लगाए

वडोदरा। गुजरात

गायत्री परिवार यूथ ग्रुप वडोदरा द्वारा विगत 2016 से हर रविवार के दिन सतत वृक्षारोपण का कार्य चलया जा रहा है। उन्होंने विगत 252 सप्ताह में 35000 से ज्यादा पौधे लगाये हैं। 27 जून 2021 को वृक्षारोपण का 253 वाँ सप्ताह मनाया गया, जिसमें 101 पौधे लगाये गये।

प्रशासन व टीवी चेनल के साथ भागीदारी

उसी दिन वडोदरा शहर की टीवी चैनल 'वीएनएम' द्वारा गायत्री परिवार यूथ ग्रुप के सदस्यों को वृक्षारोपण अभियान में सहयोग देने के लिए आमंत्रित किया गया। उप महापौर, वन-विभाग और टीवी चैनल 'वीएनएम' की उपस्थिति में वृक्षारोपण संपन्न हुआ। उसमें गायत्री परिवार के सभी सदस्यों का अभिनंदन किया गया। उप महापौर ने 'ग्रीन वडोदरा' कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग देने का निवेदन भी गायत्री परिवार के युवाओं से किया।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए पुष्करभाई, शीतल बहिन, एकता, विनायक, विक्रमभाई, निशा बहिन, नितिन भाई, चेतन भाई और काश्मीरा सोलंकी का विशेष योगदान रहा।

शिक्षण संस्थानों में वृक्षारोपण

अलवर। राजस्थान

4 जुलाई 2021 को राजकीय पॉलीटेकनिक महाविद्यालय, अलवर में गायत्री परिवार द्वारा वृहद् स्तर पर वृक्षारोपण किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री नवनीत उप जिलाधिकारी थानागाजी जिला अलवर एवं श्रीमती वर्षा जी मजिस्ट्रेट अलवर के सान्निध्य में महाविद्यालय परिसर में पीपल, नीम, बरगद आदि बड़े वृक्षों की 60 पौध रोपी गईं। सभी की सुरक्षा के लिए ट्री-गार्ड भी लगाए गए। महाविद्यालय प्रशासन ने इन पौधों की सुरक्षा, सिंचाई आदि की जिम्मेदारी ली है।

वृक्षारोपण के लिए गायत्री परिवार की ओर से शानदार पूर्व तैयारियाँ की गई थीं। जेसीबी मशीन से पूरे परिसर की सफाई की गई और गड्ढे खुदवाए गए। दिया, अलवर के सदस्य सर्वश्री अमित वशिष्ठ, मुकेश गुप्ता, मनोज शर्मा ने कार्यक्रम में विशेष जिम्मेदारियाँ निभाईं। डॉ. सरोज गुप्ता, विजय गुप्ता, दिनेश गुप्ता, राधारमण विजय, चरण सिंह, महेंद्र सिंह नरुका एवं परिव्राजक श्री दौलत राम शर्मा ने भी भाग लिया।

समर्पण और सूझबूझ

अलवर की नैष्ठिक कार्यकर्ता डॉ. सरोज गुप्ता हर वर्ष मानसून के समय अपने सम्पर्क के चिकित्सकों के विभिन्न संस्थानों में बृहद् वृक्षारोपण कराती हैं और उनकी सुरक्षा के लिए उन संस्थानों को संकल्पित कराती रही हैं। वे स्वयं भी समय-समय पर उन संस्थानों में पहुँचकर लगाए गए वृक्षों की देखभाल करती रहती हैं।

भीनमाल, जालौर। राजस्थान

महिला मण्डल भीनमाल ने 5 जुलाई को रा.बा.उ.मा. विद्यालय, बापू नगर भीलवाड़ा में वृक्षारोपण किया गया। इस अभियान में प्रमुख योगदान दे रही बहिनें-श्रीमती सरिता जैन, श्रीमती सरोजना व्यास आदि लोगों को मिशन की जानकारी प्रदान कर सत्प्रवृत्ति संवर्धन में उन्हें सहयोगी बनाने के सतत प्रयास भी कर रही हैं।

श्री महेश व्यास ने बताया कि भीनमाल शाखा ने विश्व प्रर्यावरण दिवस पर अशोक, पीपल, नीम, बिल्व, आम के 200 वृक्षों की पौध लगाने का संकल्प लिया व पौधों का पूजन किया था। घर-घर गिलोय, तुलसी, एलोविरा आदि लगाने का अभियान भी चलाया जा रहा है।

वृद्ध आश्रम में पौधारोपण

देवास। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार ने मीठा तालाब के पास स्थित वृद्धाआश्रम में वृक्षारोपण किया। जिला अपर कलेक्टर प्रकाश सिंह चौहान मुख्य अतिथि थे, जिन्होंने पर्यावरण संरक्षण के लिए गायत्री परिवार द्वारा किए जा रहे प्रयासों के लिए साधुवाद दिया व सांसों की रक्षा के लिए गायत्री परिवार का सहयोग करने का आह्वान किया।

वृद्धाआश्रम प्रभारी श्री दिनेश चौधरी तथा गायत्री परिजनों के परिजनों ने मिलकर आश्रम में छायादार और फलदार पौधे रोपे।

कोई फर्क नहीं पड़ता कि दिन के अंत में आप बलशाली हैं, होशियार हैं, सुन्दर हैं या अमीर हैं। फर्क केवल इस बात से पड़ता है कि आप प्रसन्न हैं या दुःखी हैं।

वृक्षगंगा अभियान

उत्तर प्रदेश

300 वृक्षों का जन्मदिन मनाया

अपने लगाए पौधों का जन्मदिन मनाती बहिनें

- 800 मीटर के मार्ग पर लगाए गए हैं 300 वृक्ष
- वृक्षगंगा मार्ग के रूप में जाना जाता है यह मार्ग

लखीमपुर खीरी। उ. प्र.
गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ ने पाँच वर्ष पूर्व धौराहरा ब्लॉक के ऊंचगांव महतीपुरवा में हाईवे से गांव तक जाने वाले 800 मीटर लंबे मार्ग के दोनों ओर 300 पौधे रोपे थे। इन्हें 3 जुलाई को तरुपुत्र महायज्ञ के साथ रोपा और हरीतिमा युवा मंडल ने गोद लिया था। विगत 3 जुलाई को इन पौधों की पाँचवी वर्षगाँठ बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाई गई।

श्री अनुराग मौर्य ने बताया कि इन पौधों की विशेष पहचान है। इस वृक्षारोपण कार्य के कारण यह मार्ग 'वृक्षगंगा मार्ग' के नाम से जाना जाता है। हरीतिमा युवा मंडल व महिला मण्डल ने बिना ट्री-गार्ड के भी निजी देखरेख कर इन्हें पोषित-विकसित किया है। 3 जुलाई को मनाई गई पौधों की वर्षगाँठ हृदयस्पर्शी थी, जिसमें सौरभ वर्मा, अमरनाथ वर्मा सहित तमाम गायत्री परिजन उपस्थित रहे।

गाँव-गाँव वृक्षारोपण अभियान

बुलन्दशहर। उत्तर प्रदेश
श्री गायत्री संस्कार पीठ बुलंदशहर द्वारा 26 जून को शिकारपुर क्षेत्र के ग्राम सलेमपुर, कैलावन, हिनौट, सुर्जावली तथा चितसौन स्थित विद्यालयों में पौधरोपण गायत्री महायज्ञ आयोजित किए गए। श्री कुलदीप मित्तल के मार्गदर्शन में यह अभियान चलाया गया। हरीतिमा संवर्धन के लिए समर्पित गाँववासियों और गायत्री परिवार के प्रमुख सदस्यों के सहयोग से ये कार्यक्रम अत्यंत प्रेरणादायी और सफल रहे।

शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती की स्मृति में

कानपुर। उत्तर प्रदेश
कानपुर शाखा ने शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में 4 जुलाई को वृक्षारोपण का विशेष कार्यक्रम आयोजित किया। नगर के छोटा सेण्ट्रल पार्क, शास्त्री नगर में आयोजित इस कार्यक्रम में आम, अशोक, नीम, आँवला आदि के 150 पौधे रोपे गए। उपजोन प्रभारी श्री आर.सी. गुप्ता, सर्वश्री आर.पी. लाल, लक्ष्मीनारायण, अनिल शुक्ला, सदाशिव त्रिपाठी एवं श्री आर.बी. परमार की विशेष उपस्थिति में यह कार्यक्रम अत्यंत उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ।

कानपुर के छोटा सेण्ट्रल पार्क में पौधे लगाते परिजन

शिक्षक सम्मेलन

4 जुलाई को ही सायंकाल शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में शिक्षक सम्मेलन का भी आयोजन किया गया था।

छत्तीसगढ़

विद्यालय में वन महोत्सव मनाया

दुर्ग। छत्तीसगढ़ :
जुलाई महीने में चल रहे वन महोत्सव के अंतर्गत गायत्री परिवार के युवा संगठन दिया, छत्तीसगढ़ और शासकीय हायर सेकेंडरी स्कूल थनौद, दुर्ग ने मिलकर शा. सुभाष प्राथमिक शाला बाम्बे आवास उरला के प्रांगण में वृक्षारोपण का कार्यक्रम सम्पन्न किया। इसमें 50 से अधिक फलदार पौधे रोपे गए। मुख्य अतिथि डॉ. पी.एल. साव ने प्रेरक उद्बोधन से लोगों में वृक्षारोपण की उमंग जगाई।

महिला मण्डल का जिला स्तरीय अभियान

2400 घरों में पौधे लगाने का लक्ष्य

मुजगहन। धमतरी
ग्राम मुजगहन के सात घरों में 12 जुलाई को तुलसी रोपण के साथ महिला मण्डल के तुलसी रोपण अभियान का शुभारम्भ हुआ। उल्लेखनीय है कि बहिनों द्वारा जिले के धमतरी, कुरुद, मगरलोड, नगरी एवं भखारा ब्लॉक में 2400 तुलसी पौधा लगाने का लक्ष्य रखा गया है।

कारागार में रोपे 500 पौधे

बिहार

जहानाबाद। बिहार
मण्डल कारा जहानाबाद के परिसर में 11 जुलाई को लगभग पाँच सौ पौधे लगाए गए अधिकांश पौधे फलदार थे। जेल अधीक्षक राधेश्याम सुमन और जेलर जितेन्द्र कुमार गुप्ता ने प्रथम पौधा लगाकर वृक्षारोपण कार्यक्रम की शुरूआत की। इस अवसर पर जेल अधीक्षक ने वृक्षों के उपकार की चर्चा कर लोगों की आस्था को बल दिया। जेलर महोदय ने गायत्री परिवार के वृक्षारोपण अभियान को प्रशंसनीय एवं सराहनीय कार्य बताया। समग्र कार्यक्रम में बंदियों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

1,00,000 पौधे लगायेंगे

इस कार्यक्रम में गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ समन्वयक श्री रंगेश कुमार ने जिले में एक लाख पौधे लगाने का संकल्प व्यक्त किया।

> हरे-भरे वृक्षों पर होता कुल्हाड़ी का हर वार मनुष्यमात्र के जीवन की एक-एक साँस घटाता जाता है।

85 वर्षीय योगाचार्य की प्रेरणाओं से नवउत्साह से भर उठा जनमानस

सम्भल। उत्तर प्रदेश : कोरोना काल में जीवनी शक्ति, सकारात्मक सोच, ईश्वर विश्वास और आंतरिक उल्लास की सबसे ज्यादा आवश्यकता होती है। योग साधना इनके अभिवर्धन में संजीवनी साबित होती है। संभलवासी नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं और श्रद्धालुओं को यह प्रत्यक्ष अनुभव लगभग 85 वर्षीय योगाचार्य शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री रामसिंह यादव के शिविरों में हुआ। इस उम्र में भी उनकी चुस्ती-फुर्ती, सक्रियता तथा संदेश ने सभी को प्रभावित किया।

श्री रामसिंह जी 16 से 30 जून तक संभल क्षेत्र में थे। उन्होंने प्रतिदिन कोरोना प्रोटोकॉल का पालन करते हुए योग प्रशिक्षण दिया प्रतिदिन अलग-अलग स्थानों पर प्रातः योग शिविर और सायं दीपयज्ञ कराए। जिससे भी मिलते उसे युगऋषि का ऊर्जावान कर देने वाला संदेश अवश्य देते थे। उनके प्रवास से पूरे क्षेत्र में नवऊर्जा का संचार हुआ है।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

श्री दिनेश कुमार शर्मा, भरतपुर। राजस्थान
गायत्री शक्तिपीठ से जुड़े कर्मठ कार्यकर्त्ता एवं राजकीय आयुर्वेद विभाग में कम्पाउण्डर श्री दिनेश कुमार शर्मा 58 वर्ष आयु में 27 अप्रैल 2021 को गुरुसत्ता की सूक्ष्मचेतना के साथ एकाकार हो गए। वे 2020 में कोरोना संक्रमित मरीजों की सेवा में पूरी तन्मयता से सक्रिय रहे। आयसोलेशन वॉर्ड, रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड आदि पर जाकर लोगों को अपना बनाया आयुर्वेदिक काढ़ा पिलाया। सेवा करते हुए स्वयं संक्रमित हुए और अंततः देह त्याग दी। उनकी विशिष्ट सेवाओं के लिए वे जिला कलेक्टर भरतपुर द्वारा सम्मानित भी किये गये।

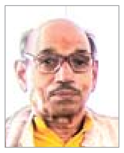

श्री विद्यानंद सिंह बनाफर, हथौद, बालोद। छत्तीसगढ़
गायत्री परिवार हथौद के श्री ठाकुर विद्यानंद सिंह बनाफर 13 अप्रैल 2021 को 80 वर्ष की आयु में गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गये। उन्होंने सन् 1969 में महासमुंद में परम पूज्य गुरुदेव के पौरोहित्य में सम्पन्न 1008 कुण्डीय गायत्री यज्ञ में दीक्षा ली। उन्होंने 1970-71 में गायत्री तपोभूमि मथुरा में आयोजित विभिन्न शिविरों में गुरुदेव के पावन सान्निध्य में प्रशिक्षण और आशीर्वाद प्राप्त किया। वे शान्तिकुञ्ज की टोलियों में भी जाते रहे। उन्होंने गायत्री यज्ञ से धमधा, साजा और बेमेतरा क्षेत्र के लोगों में विचार-क्रांति का बीजारोपण किया।

उत्तर प्रदेश में ऑनलाइन सामूहिक गर्भोत्सव

488 बहिनों ने गर्भ संस्कार कराए

कार्यशाला से 12 केन्द्र ऑनलाइन जुड़े थे

19 और 20 जून को उत्तर प्रदेश का प्रान्त स्तरीय ऑनलाइन 'सामूहिक गर्भोत्सव कार्यक्रम' आयोजित हुआ। इसमें 488 गर्भवतियों ने भाग लिया। 186 गर्भवतियों ने व्यक्तिगत रूप से जुड़कर गर्भ संस्कार संपन्न कराया। ग्रामीण क्षेत्रों के 12 केन्द्रों पर, जो ऑनलाइन जुड़े थे, गर्भवतियों का सामूहिक गर्भसंस्कार कराया गया। लखीमपुर खीरी में 6, कन्नौज व सीतापुर में दो-दो तथा मिर्जापुर, आजमगढ़ से एक-एक केन्द्र पर सामूहिक पुंसवन संस्कार की व्यवस्था बनाई थी। संस्कार संचालन सुलतानपुर की श्रीमती प्रज्ञा सक्सेना और सुश्री प्रेरणा सक्सेना द्वारा किया गया।

गर्भोत्सव कार्यक्रम शान्तिकुञ्ज के वरिष्ठ प्रतिनिधियों के प्रेरक संदेश के साथ सम्पन्न हुआ। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या, उनकी सहधर्मिणी श्रीमती शेफाली पण्ड्या तथा आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी प्रकोष्ठ की प्रभारी डॉ. गायत्री शर्मा ने गर्भ संस्कार के वैज्ञानिक तथ्यों सहित उसके चमत्कारिक परिणामों की जानकारियाँ दीं। 19 जून की शाम को अभियान की प्रांतीय समन्वयक डॉ. संगीता सारस्वत ने गर्भ संस्कार की आवश्यकता एवं अनुशासन से अवगत कराया।

यह आयोजन अभियान से जुड़े सभी कार्यकर्ता भाई-बहनों के शानदार सहयोग से सम्पन्न हुआ। श्रीमती किरण श्रीवास्तव, श्रीमती रीता सारस्वत, श्रीमती नीरू तिवारी, श्रीमती सुमन बाला शर्मा, श्रीमती क्षमा चौधरी श्रीमती, श्रीमती रुचि सक्सेना, श्रीमती पुष्पा मिश्रा, श्रीमती अर्चना मिश्रा का विशेष सहयोग रहा। शिविर की सफलता ने सभी कार्यकर्त्ताओं को भी नई ऊर्जा प्रदान की।

माँ की पाठशाला

गर्भोत्सव के उपरांत गर्भवतियों के प्रशिक्षण के लिए 'मां की पाठशाला' का शुभारंभ किया गया। इसके अंतर्गत नियमित रूप से ऑनलाइन माध्यम से प्रेरणा, प्रशिक्षण का क्रम तथा योगाभ्यास-प्राणायाम-ध्यान आहार सम्बन्धी जानकारी, गर्भ संवाद, संगीत आदि का प्रशिक्षण-अभ्यास का क्रम रहेगा।

हर माह होंगे ऐसे आयोजन

इस तरह का 'सामूहिक गर्भोत्सव कार्यक्रम' आगामी गुरुपूर्णिमा के अवसर पर दिनांक 23 और 25 जुलाई को भी आयोजित किया जा रहा है और आगे भी प्रत्येक माह किया जाता रहेगा।
संपर्क सूत्र : 82995 11135

आपकी अच्छाईयाँ बेशक ओझल हो जायें, लेकिन लोगों के हृदय पर पड़ी उनकी छाप कभी मिटेगी नहीं।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2021

'घर-घर पहुँचे योग, देश अपना बने निरोग' के संकल्प के साथ मनाया गया

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया

शान्तिकुञ्ज से ऑनलाइन जुड़े 500 लोग

10 दिनों तक ऑनलाइन पूर्वाभ्यास भी किया

उज्जैन। मध्य प्रदेश

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस से पूर्व उज्जैन के लगभग 500 लोगों ने शान्तिकुञ्ज से ऑनलाइन जुड़कर योगाभ्यास करने का निर्णय लिया और उससे पूर्व ऑनलाइन ही 10 दिनों तक नियमित योगाभ्यास किया। वे सभी 21 जून-योग दिवस के सामूहिक योगाभ्यास में भी शामिल हुए। दिया ग्रुप उज्जैन ने मांगलिक भवन, विवेकानंद कॉलोनी में जन अभियान परिषद तथा बास्केट बॉल ग्राउंड, माधव कॉलेज में कोरोना प्रोटोकॉल के नियमों का पालन कराते हुए सामूहिक योगाभ्यास कराया।

बड़नगर में महिला मंडल ने दीप यज्ञ के साथ सामूहिक योगाभ्यास के कार्यक्रम किये। सामूहिक योगाभ्यास का संचालन श्रीमती मोनिका जोशी, श्रीमती निधि, श्रीमती माया यादव ने तथा बड़नगर में श्रीमती किरण सोनी ने किया।

फोटो प्रतियोगिता

उज्जैन में इस निमित्त विभिन्न आयु वर्ग की प्रतियोगिता का भी आयोजन भी किया गया, जिसमें लोगों से अपने घर पर किए जा रहे योगाभ्यास के फोटो भेजने के लिये कहा गया था। इसके अंतर्गत चि. पवन जैन 15 वर्ष से कम आयु वर्ग में, श्रीमती सोनिका भटनागर 15 से 50 वर्ष आयु वर्ग में और श्री गिरधारी लाल त्रिवेदी 50 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में प्रथम रहे।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर शान्तिकुञ्ज से ऑनलाइन जुड़कर समूहों में योग करते उज्जैन के परिजन

विशाल रक्तदान शिविर

45वाँ शिविर, वरिष्ठ लोकसेवियों ने दी बधाई

टाटानगर। झारखण्ड

नवयुग दल (युवा प्रकोष्ठ) टाटानगर द्वारा गायत्री जयंती तथा परम पूज्य गुरुदेव के महाप्रयाण दिवस पर 45वाँ रक्तदान शिविर आयोजित कर भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। यह शिविर ब्लड बैंक जमशेदपुर में आयोजित हुआ। इसमें कुल 151 यूनिट रक्त संग्रह कर ब्लड बैंक को दिया गया।

पावन गायत्री जयंती के दिन प्रातः 7 बजे से नवयुग दल के 24 युवाओं द्वारा सामूहिक यज्ञ सम्पन्न कर वेदमाता से सबके लिए सद्बुद्धि, सबके लिए उज्वल भविष्य, उत्तम स्वास्थ्य एवं निरोग जीवन हेतु प्रार्थना की गई। विश्वव्यापी महामारी कोरोना से विश्व मानवता की रक्षा हेतु यज्ञ भगवान को आहुतियाँ समर्पित की गईं। तत्पश्चात नवयुग दल के कार्यकर्त्ताओं ने रक्तदान करना प्रारम्भ किया।

टाटानगर में चल रहा रक्तदान शिविर

रक्तदान समारोह के सम्मानित अतिथि के रूप में लोकसेवी डॉ. अजय कुमार, अभय सिंह, दिनेश कुमार जी, डॉ. संजय गिरी तथा डॉ. कुणाल थे। उन्होंने नवयुग दल के कार्यकर्ताओं को अपनी शुभकामनाएँ प्रदान कीं। इस अवसर पर टाटानगर के रक्तदान अभियान के संयोजक श्री संजीव सिन्हा ने कार्यकर्ताओं के परिश्रम की प्रशंसा करते हुए कहा कि विपरीत परिस्थिति (लॉक डाउन) में भी लक्ष्य से अधिक रक्तदान कराया, इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं।

युवा प्रकोष्ठ के प्रांतीय समन्वयक संतोष कुमार राय ने कार्यकर्ताओं के सफल प्रयास की सराहना करते हुए अपना 45 वाँ रक्तदान किया।

कॉन्वेण्ट स्कूल में कार्यक्रम, महापौर सहित अनेक गणमान्य उपस्थित रहे

चन्द्रपुर। महाराष्ट्र

चंद्रपुरः अखिल विश्व गायत्री परिवार चंद्रपुर एवं भाजपा आध्यात्मिक मोर्चा चंद्रपुर महानगर के संयुक्त सहयोग से न्यू इंडिया कॉन्वेंट हाई स्कूल में अंतराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। तुलसी को जल अर्पण कर गायत्री मंत्र व संगीत प्रार्थना से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। उपस्थित जन समूह को योग द्वारा स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन तथा सभ्य, सुसंस्कृत समाज के निर्माण हेतु आत्मबोध, तत्वबोध, आत्मचिंतन, आत्मशोधन, आत्मनिर्माण व आत्मविकास के प्रति सतत जागरुक रहने के सूत्र बताये गये।

महापौर सौ. राखी कंचर्लावार कार्यक्रम की मुख्य अतिथि थीं। उनके अलावा भाजपा अध्यक्ष डॉ. मंगेश गुलवाडे, महामंत्री पार्षद श्री सुभाष कासनगोट्टूवार, सौ. मंजुताई कासनगोट्टूवार, श्री राजकुमार पाठक आदि गणमान्यों की गरिमामय उपस्थिति रही। श्री सुभाष कासनगोट्टूवार ने योगाभ्यासियों को साहित्य, सेनिटाइजर एवं मास्क वितरित किये तथा नियमित योगाभ्यास करने, पर्यावरण के संरक्षण-संवर्धन में योगदान देने तथा व्यसनों-कुरीतियों से दूर रहने का संकल्प कराये। अतिथियों द्वारा योग शिक्षकों एवं योग के क्षेत्र में जनजागरुकता बढ़ाने वाले परिजनों को शॉल, श्रीफल, स्मृति चिह्न व प्रमाण पत्र भी प्रदान किये गये।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. शैलेन्द्र शुक्ला ने किया। योगाभ्यास पतंजलि योगपीठ से सौ. सुनीता श्रीगड़ीवार, श्री अनूप शर्मा, श्री प्रशांत तुंगीडवार, निर्मला माता आध्यात्मिक संस्थान के श्री राहुल वंधारे, श्री प्रदीप लोखंडे ने कराया। आयोजन की सफलता में गायत्री परिवार के युवा कार्यकर्ताओं एवं स्कूल संचालक श्री आशीष धीर, श्रीराम सेना इंटरनेशनल, गुरुदेव सेवा मंडल, ज्येष्ठ नागरिक संघ, आर्ट ऑफ लिविंग आदि संगठनों का विशेष योगदान रहा।

चन्द्रपुर में योगाभ्यासियों को सम्बोधित करतीं महापौर सौ. राखी कंचर्लावार

सेवा का आदर्श प्रस्तुत कर रहा है

अरिहंताणं रक्त सारथी समूह

भीनमाल। राजस्थान

टीकाराम भाटी नाहर हॉस्पिटल भीनमाल में भर्ती मरीज ओखसिंह को इमरजेंसी में रक्त की आवश्यकता पड़ने पर अरिहंताणं रक्त सारथी समूह के सक्रिय रक्तवीर साथी जितेन्द्र कुमार सोनी द्वारा एक यूनिट रक्तदान कर सराहनीय कार्य किया गया। अरिहंताणं रक्त सारथी समूह भीनमाल ब्लॉक के सहप्रभारी मनोज सेन ने बताया कि इसी प्रकार राज हॉस्पिटल, नाहर हॉस्पिटल, राजकीय चिकित्सालय व कृष्णा हॉस्पिटल भीनमाल में रक्तवीर साथी महेन्द्रकुमार माली, झालमसिंह राजपुरोहित, जुंजाणी, मोहम्मद खान आलडी, कृष्ण कुमार राणा देताकला ने रक्तदान कर सराहनीय कार्य किया। टीम पदाधिकारियों ने सभी रक्तदाताओं को सराहनीय कार्य हेतु बधाई दी। इस दौरान कैलाश कुमार मुद्दा ने बताया कि जल्दी ही अगले महीने रक्तदाताओं के उत्साहवर्धन हेतु सम्मान समारोह का आयोजन किया जाएगा।

भीनमाल में रक्तदान करते नवयुवक

प्रभावित हो रहे हैं नवयुवक

बस्ती। उत्तर प्रदेश

बस्ती जिला के कप्तानगंज खण्ड ओझागंज गाँव में लोगों ने बहुत ही हर्ष एवं जोश के साथ योग दिवस मनाया। इस कार्यक्रम में विशेष प्रकार के योग-आसन जैसे-ताड़ासन, तिर्यक ताड़ासन, अर्ध कटिचक्रासन, सूर्य नमस्कार, पवन मुक्तासन, पीटी, सपाट दंड बैठक एवं प्राणायाम आदि कराये गए।

इस कार्यक्रम में युवाओं ने विशेष उत्साह के साथ भाग लिया। उन्होने योगाभ्यासन से चुस्ती-स्फूर्ति और ताजगी का अनुभव किया। इस अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर दुर्गा प्रसाद, पप्पू ओझा, आकाश, सुधांशु, अमन आदि विशेष रूप से उपस्थित रहे।

बस्ती में मनाए गए अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर में भाग लेते नवयुवक

माँ भगवती गौ सेवा केन्द्र का निर्माण कार्य प्रारम्भ

रायगढ़। छत्तीसगढ़

शहर के मध्यस्थ क्षेत्र पंजाब नैशनल बैंक रोड पर नीलांचल भवन के पास गायत्री परिवार ट्रस्ट की भूमि खाली थी। वहाँ के ट्रस्टियों ने इस स्थान का उपयोग गौ सेवा केन्द्र का निर्माण के लिए करने का निर्णय लिया है। इस भूमि पर माँ भगवती गौ सेवा केंद्र बनाया जा रहा है, जिसमें बीमार व सड़क दुर्घटना में घायल गौ माताओं की सेवा की जाएगी। यह केन्द्र जनसहयोग से संचालित किया जाएगा।

केन्द्र का निर्माण कार्य प्रारंभ कर दिया गया है। फिलहाल बाउंड्रीवाल बनाने का कार्य प्रगति पर है। गायत्री परिवार रायगढ़ से संबद्ध माँ भगवती गौ सेवा केंद्र का प्रथम अध्यक्ष गौभक्त श्री महादेव प्रसाद अग्रवाल को बनाया गया है। वे आचार्यश्री गौशाला बैसपाली व श्री मोहन गौशाला ठाकुरपाली के भी संरक्षक है। गौ सेवा के प्रति समर्पित श्री अग्रवाल के कार्य को देखते हुए उन्हें माँ भगवती गौ सेवा केंद्र के अध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

श्री अग्रवाल ने बताया कि इस गौ सेवा केंद्र में बीमार व घायल गायों की देखरेख, उपचार की सुविधा होगी। हमारी इच्छा शहर सहित आसपास विचरण करने वाली गौमाताओं की सेवा करना है। कई गायें सड़क दुर्घटना में घायल हो जाती हैं। उनका उपचार नहीं हो पाता। इसलिए गायत्री परिवार ने यहाँ माँ भगवती के नाम से गौ सेवा केंद्र खोलने का निर्णय लिया है, यहाँ गायों की देखरेख व सेवा के लिए पशु चिकित्सक व अन्य कर्मचारी रखे जाएँगे। उन्होंने सभी गौभक्तों, समाजसेवियों से सहयोग की अपेक्षा की है।

माँ भगवती गौ सेवा केन्द्र के निर्माण कार्य का निरीक्षण करते कार्यकर्त्ता

प्यार और सेवा-संवेदना के बिना जीवन शून्य है। इन्हें बाँटिये, किसी प्रकार के बदले की आशा के बिना क्योंकि यह सेवा है, सौदा नहीं।

राजस्थान की प्रान्तीय कार्यशाला 'आओ गढ़ें संस्कारवान् पीढ़ी'

जूम एप तथा यूट्यूब से एक हजार से अधिक प्रतिभागी जुड़े

जयपुर। राजस्थान

अखिल विश्व गायत्री परिवार, शान्तिकुञ्ज हरिद्वार द्वारा संचालित 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' अभियान के अंतर्गत गायत्री परिवार राजस्थान की ओर से गर्भवती महिलाओं के लिए नौ दिवसीय निःशुल्क कार्यशाला 'दिव्य गर्भोत्सव' का 25 जून से 03 जुलाई तक की तिथियों में आयोजन हुआ। जूम एप और यू ट्यूब के माध्यम से लगभग एक हजार प्रतिभागियों ने कार्यशाला में भाग लिया।

कार्यशाला का संचालन गायत्री शक्तिपीठ ब्रह्मपुरी, जयपुर से हुआ। शक्तिपीठ के व्यवस्थापक रणवीर सिंह चौधरी, जयपुर के समन्वयक श्री ओमप्रकाश अग्रवाल एवं अन्य ने वेदमाता गायत्री और गुरुसत्ता के समक्ष गायत्री मंत्र के साथ दीप प्रज्वलन कर कार्यशाला का शुभारम्भ किया।

प्रतिदिन अपराह्न तीन से चार बजे तक विषय विशेषज्ञों पर प्रेरक उद्बोधन हुए। शान्तिकुञ्ज से राजस्थान जोन के प्रभारी श्री जय सिंह यादव, डॉ. गायत्री शर्मा, श्रीमती शालिनी वैष्णव, मुंबई की सुश्री श्रद्धा साहू, नागपुर की डॉ. मधुरी पराले, अलवर की डॉ. सरोज गुप्ता, जयपुर की सुश्री दीक्षा जामवाल, सुश्री अर्पिता एरन, भीलवाड़ा के डॉ. राधेश्याम श्रोत्रिय आदि ने बहुत ही सुंदर और सारगर्भित तरीके से विषय संबंधित मार्गदर्शन दिया। तत्पश्चात् चार से साढ़े चार बजे तक प्रश्नोत्तरी सत्र में गर्भवती महिलाओं ने प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासाओं का समाधान पाया।

> " माता-पिता से बच्चे को केवल शरीर ही नहीं प्राप्त होता, मन और संस्कार भी प्राप्त होते हैं।
>
> - डॉ. गायत्री शर्मा, शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि
> प्रभारी आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान

अपनी जिम्मेदारी समझें माता-पिता

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान की केन्द्रीय समन्वयक डॉ. गायत्री शर्मा ने गर्भ का ज्ञान-विज्ञान विषय पर सार्थक और प्रभावी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि विज्ञान की दृष्टि से देखा जाए तो मानव की अधिकांश विकास यात्रा जन्म से पूर्व, गर्भ से ही आरंभ हो जाती है। गर्भावस्था में ही शिशु में ज्ञानेन्द्रियों, कर्मेन्द्रियों के साथ मष्तिष्क का विकास भी हो जाता है। हमारे प्राचीन ऋषियों ने इसे हजारों वर्ष पूर्व समझ लिया था, इसीलिए गर्भाधान संस्कार से संस्कार रोपण की प्रक्रिया का शुभारंभ किया गया था। आज का आधुनिक विज्ञान भी इस बात को समझ चुका है और इसकी पुष्टि भी करता है। इसलिए सशक्त पीढ़ी के निर्माण का शुभारंभ गर्भाधान की अवस्था से ही करना होगा। उन्होंने कहा कि माता-पिता से बच्चे को केवल शरीर ही नहीं प्राप्त होता, मन और संस्कार भी प्राप्त होते हैं। बच्चे की आयु, कर्म, धन, विद्या और मृत्यु गर्भ में रच जाती है।

मनचाही सन्तान प्राप्त कर सकती है माँ

डॉ. सरोज गुप्ता ने कहा कि माँ चाहे तो मनचाही संतान प्राप्त हो सकती है। वह अपनी कोख से राम, भरत, विवेकानंद, शिवाजी जैसी संतान को जन्म दे सकती है। इसके लिए उन्हें आदर्श दिनचर्या का पालन करना होगा। माँ जैसे गुण अपनी भावी संतान में देखना चाहती है, उसे वैसे ही गुण उसे स्वयं में विकसित करने होंगे। उन्हें वैसा ही चिन्तन, मनन, विचार, व्यवहार अपने जीवन में लाना होगा।

तीन माह में करवाएँ पुसंवन संस्कार

सुश्री सविता सिंह ने कहा कि तीसरे माह से भ्रूण में आकार और संस्कार विकसित होने लगते हैं। इसी समय पुंसवन संस्कार किया जाता है। आने वाला शिशु माता-पिता, कुल, परिवार तथा समाज के लिए विडंबना न बने, अपने सौभाग्य और गौरव का कारण बने, इस दृष्टि से गर्भस्थ शिशु के शारीरिक, बौद्धिक तथा भावनात्मक विकास के लिए यह संस्कार करवाना बहुत जरूरी है। इससे जीव के पूर्व जन्म के संस्कारों का शमन होकर नए संस्कारों की स्थापना होती है। कार्यशाला के अंतिम दिन शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि सुश्री ऋतु सिंह और सुश्री सविता सिंह ने गर्भोत्सव संस्कार करवाया। बड़ी संख्या में गर्भवती माताओं ने घर बैठे संस्कार संपन्न किया।

गर्भवती माँ की दिनचर्या में अवश्य शामिल रहे

- ब्रह्म मुहूर्त में जागना, ईश स्मरण की प्रार्थना।
- आनन्ददायक उत्सावर्धक जागरण गीत-संगीत सुनना।
- आत्मबोध साधना की साधना।
- धरती माँ को प्रणाम करने के साथ उनके जैसी सहनशीलता, धैर्य के गुण बच्चे में आएँ ऐसी प्रार्थना।
- रात को तांबे के पात्र में रखा पानी बिना कुल्ला-ब्रश किए उकडूँ.बैठकर घूँट-घूँट पीना।
- बच्चे का स्नायु तंत्र विकसित हो इसके लिए ध्यान। - स्नानोपरांत बच्चे में देवत्व के विकास की कामना के साथ यज्ञ-आरती।
- नाश्ता, दोपहर और रात के भोजन में पौष्टिक और विविधता वाला आहार। नाश्ते में फल, अंकुरित अनाज, दूध, दलियां। शाम को हल्का भोजन। भोजन बनाते समय गायत्री मंत्र बजाएँ और खुद गुनगुनाएँ।
- दोपहर के समय में ध्यान।
- इसके बाद 45 मिनट नींदें।
- उठने के बाद बौद्धिक खेल खेलें, गार्डनिंग, सिलाई, पेंटिंग जैसे कार्य में समय व्यतीत करें। इससे बच्चे का आई.क्यू. (मानसिक दक्षता) लेवल बढ़ता है।
- घर में एक पौधा लगाएँ, उसमें प्रतिदिन पानी डालें।
- प्रतिदिन गर्भस्थ शिशु से संवाद। उसे महापुरुषों की गाथाएँ सुनाएँ, पारिवारिक सदस्यों से परिचय कराएँ।

वनवासी गाँवों में महिला मण्डल द्वारा ऑनलाइन प्रशिक्षण

जोबट, अलीराजपुर। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्ति पीठ जोबट के महिला मण्डल द्वारा क्षेत्र के महिला मण्डलों को पाँच दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण दिया गया। जिसमें बोरी, खट्टाली, जोबट, आंबुआ और नानपुर की 33 बहनों ने भाग लिया। यह पाँच दिवसीय था, जो बहनों की सुविधा को देखते हुए प्रतिदिन रात्रि में 9:00 से 10:30 बजे तक चलता था।

प्रशिक्षण देने वाली बहनों ने स्वयं 45 दिन तक विषय की तैयारी की और विषय विशेषज्ञ का स्तर प्राप्त कर यह क्रम बनाया। कार्यवाहिका श्रीमती केशर राठौड़ ने संगठन, सरोज टवली ने साधना, मधु शर्मा ने संस्कारशाला, वंदना वाणी ने आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी, सारिका सक्सेना ने महिला जागरण विषयों के विविध पक्षों की जानकारी दी। वंदना वाणी ने नित्य नए-नए गीतों को स्वर देकर शिविर को रोचक व सरस बनाया।

छठें दिन समारोहपूर्वक शिविर का समापन हुआ, जिसके मुख्य अतिथि डॉ. शिवनारायण सक्सेना व अध्यक्ष श्री संतोष वर्मा थे। छत्तीसगढ़ की रुक्मिणी बहिन विशेष अतिथि थीं। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती मधु शर्मा ने किया।

जूम एप पर चल रहा प्रशिक्षण

डॉ. सक्सेना ने आत्म निर्माण, परिवार निर्माण तथा समाज निर्माण के महत्व को बताते हुए नियमित स्वाध्याय करने के लिए प्रेरित किया। श्री संतोष वर्मा ने रचनात्मक कार्यक्रम की चर्चा करते हुए कहा कि हम सप्त क्रांति की ओर बढ़ रहे हैं, इसलिए अगला प्रशिक्षण 7 दिन का होना चाहिए। रुक्मिणी देवी ने आत्मबोध पर जोर देते हुए आत्मशक्ति को पहचाने व आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

कोरोनाकाल की शिथिलता के बाद यह कार्यक्रम पूरे क्षेत्र में नया उत्साह बढ़ाने वाला सिद्ध हुआ।

गायत्री विद्यापीठ राजनांदगाँव का गौरव

सीबीएसई बोर्ड की परीक्षा (दसवीं) की प्रावीण्य सूची में चार छात्राएँ

राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़

शिक्षा और संस्कार के क्षेत्र में अग्रणी गायत्री विद्यापीठ राजनांदगाँव की 4 छात्राओं को सीबीएसई बोर्ड द्वारा प्रावीण्य सूची में स्थान दिया गया। इन छात्राओं का सत्र 2019-20 में कक्षा 10वीं में आयोजित परीक्षा में श्रेष्ठ प्रदर्शन रहा। आस्था सिन्हा ने संस्कृत में 100 में 99 अंक अर्जित किये। अंकिता गुप्ता ने अंग्रेजी में, साक्षी सोनी ने बेसिक मैथ्स में तथा विशाखा हिन्दूजा ने सोशल साइंस में शत प्रतिशत अंक अर्जित किये। चारों ही छात्राओं ने प्रावीण्य सूची में स्थान प्राप्त किया।

प्रावीण्य सूची में आई चार छात्राएँ शिक्षकों के साथ

अपने विद्यार्थियों की शानदार सफलता पर प्राचार्या श्रीमती वत्सला अय्यर, उप प्राचार्या श्रीमती रश्मि ठाकुर एवं सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं के साथ-साथ गायत्री शिक्षण समिति के अध्यक्ष श्री नंदकिशोर सुरजन, उपाध्यक्ष श्रीमती संध्या देवी सिंघल, सचिव श्री हरीश गांधी, मुख्य प्रबंध ट्रस्टी श्री सूर्यकांत चितलांग्या आदि ने शुभकामनाएँ दीं, उत्साहवर्धन किया।

साधुवाद!

गायत्री विद्यापीठ राजनांदगाँव परम पूज्य गुरुदेव की विचारधारा के अनुरूप विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहता है। गायत्री उपासना के प्रभाव, गुरुसत्ता के आशीर्वाद और शिक्षकों की अभिभावकों जैसी भूमिका और मार्गदर्शन से इस विद्यालय के विद्यार्थी हर वर्ष बोर्ड की परीक्षा में प्रावीण्य सूची में स्थान प्राप्त करते हैं। यह समग्र गायत्री परिवार के लिए गौरव का विषय है। उनके प्रशंसनीय प्रयास तथा विद्यार्थियों की लगन, मेहनत के लिए शान्तिकुञ्ज एवं अखिल विश्व गायत्री परिवार की ओर से साधुवाद।

युगसाहित्य मानवीय जीवन मूल्यों का बोध कराता है। -सुश्री शुक्ला

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

गायत्री ज्ञान मंदिर इंदिरा नगर, लखनऊ के विचार क्रान्ति ज्ञानयज्ञ अभियान के अन्तर्गत 341वीं स्थापना भारतीय प्रबन्ध संस्थान आई.आई.एम., लखनऊ की निदेशिका सुश्री अर्चना शुक्ला के पुस्तकालय में हुई। वहाँ युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा रचित वाङ्मय के समस्त 79 खण्ड स्थापित किए गए। यह वाङ्मय सेट गायत्री ज्ञान मंदिर इन्दिरा नगर की ट्रस्टी, श्रीमती ऊषा सिंह ने पुस्तकालय हेतु भेंट किया।

इस अवसर पर युग निर्माण योजना के सम्पादक श्री आई.एस. पाण्डेय ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि युगऋषि का साहित्य नैतिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान करता है। संस्थान की निदेशिका सुश्री अर्चना शुक्ला ने कहा कि आचार्य जी का साहित्य मानवीय जीवन मूल्यों का बोध कराता है। वाङ्मय स्थापना अभियान के मुख्य संयोजक उमानंद शर्मा ने कहा कि विचार क्रांति अभियान इस युग की नितांत आवश्यकता है, जनमानस में सद्ज्ञान का प्रकाश फैले और पीड़ा-पतन से मानव जीवन मुक्त हो सके, इसलिए ज्ञानयज्ञ युगधर्म है।

जूम एप पर चल रहा प्रशिक्षण

इस अवसर पर संस्थान की निदेशिका सुश्री अर्चना शुक्ला, संस्थान के ओ.एस.डी. ब्रिगेडियर श्री दिनेश शर्मा, श्री एम.सी. शुक्ला (प्रशासनिक अधिकारी), श्री मारुति नंदन, श्री नरेन्द्र देव, श्री हरे राम शर्मा आदि उपस्थित थे।

महाराष्ट्र में ट्री-गार्ड बनाने में जुट गई तरुणाई

अपने लगाए पेड़ों की सुरक्षा के लिए स्वयं ट्री-गार्ड बनाने में जुट गए नागपुर के नवयुवक

नागपुर। महाराष्ट्र

वृक्षारोपण आसान है, लेकिन वृक्षों की सुरक्षा का कार्य महान है। नन्हे पौधों को सुरक्षित करने के लिए आमतौर पर ट्री-गार्ड लगाए जाते हैं, लेकिन यह कार्य खर्चीला है।

गायत्री परिवार नागपुर के तरुणों में वृक्षारोपण की भरपूर उमंग है, लेकिन ट्री-गार्ड खरीदना उनके लिए आसान नहीं है। इसलिए प्रणय शेगावकर और उनके साथियों ने स्वयं ही यू-ट्यूब का सहारा लेकर ट्री-गार्ड बनाने की ठान ली। स्वयं अपने पैसे इकट्ठे कर सामान ले आए और वैल्डिंग आदि कार्यों के साथ जुट गए ट्री-गार्ड बनाने में। कोरोना काल के कारण सभी दिन काम नहीं होता, छुट्टियों के दिन वे इस कार्य में लगाते हैं। अब तक वे 50 से अधिक ट्री-गार्ड बना व लगा चुके हैं। यह अभियान निरंतर जारी है।

प्रणय शेगावकर ने बताया :

- जो ट्री-गार्ड बाजार में 1900 रुपये में उपलब्ध है वह 740 रुपये में बनकर तैयार हो जाता है।
- ट्री-गार्ड्स पर सद्वाक्य की प्लेटें भी लगाई गई हैं।

शान्तिकुञ्ज आए नवनियुक्त मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी

शान्तिकुञ्ज और डॉ. प्रणव पण्ड्या जी हमारे प्रेरणा पुंज हैं।

– श्री पुष्कर सिंह धामी, मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड के नवनियुक्त मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी 8 जुलाई को शान्तिकुञ्ज पधारे। अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख द्वय श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी से मार्गदर्शन आशीर्वाद ग्रहण करने के उपरान्त उन्होंने कहा कि गायत्री परिवार, शान्तिकुञ्ज और श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी हमारे प्रेरणा पुंज और प्रदेश के विकास के लिए पथ प्रदर्शक हैं। उत्तराखण्ड के विकास में हम आपका सतत मार्गदर्शन लेते रहेंगे। उन्होंने अध्यात्म को नई दिशा देने संस्कार परम्परा को लोकप्रिय बनाने में शान्तिकुञ्ज की भूमिका की विशेष रूप से सराहना की।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने प्रदेश के नवनियुक्त मुखिया का मंगल तिलक एवं युगऋषि की विचार संजीवनी-उनका साहित्य भेंट करते हुए हार्दिक स्वागत, अभिनन्दन किया। उन्होंने कहा कि अध्यात्म उत्तराखण्ड की प्रमुख पहचान है। हम अपनी गौरवशाली ऋषि परम्परा को विश्वव्यापी बनाकर मानवता का बड़ा उपकार कर सकते हैं। इस भेंटवार्ता में प्रदेश को नशामुक्त करने और रोज़गार बढ़ाने पर भी चर्चा हुई।

आरम्भ में शान्तिकुञ्ज पहुँचने पर डॉ. चिन्मय पण्ड्या, प्रतिकुलपति देव संस्कृति विश्वविद्यालय ने स्वागत किया। उन्होंने शान्तिकुञ्ज एवं देवसंस्कृति विश्वविद्यालय द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमों की जानकारी दी। इस अवसर पर शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री मदन कौशिक, कैबिनेट मंत्री श्री धनसिंह रावत, श्रीमती रेखा आर्य, स्वामी यतीश्वरानंद, जिलाधिकारी, पुलिस अधिकारी सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

श्रद्धेयद्वय से चर्चा करते मुख्यमंत्री श्री धामी, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री कौशिक, मंत्री श्री रावत

शान्तिकुञ्ज शिविर सूचना

11 अगस्त 2021 से आरम्भ हो रहे हैं नौ दिवसीय संजीवनी साधना सत्र एवं एक मासीय युगशिल्पी शिविर

कोविड-19 प्रोटोकॉल का कड़ाई से पालन होगा।
शान्तिकुञ्ज से अनुमति प्राप्त सीमित संख्या में साधकों को ही प्रवेश दिया जाएगा।

एक लम्बे अन्तराल के बाद शान्तिकुञ्ज में सत्र श्रृंखला आरम्भ हो रही है। लेकिन यह पूर्व की भाँति नहीं बल्कि सोशल डिस्टेसिंग का ध्यान रखते हुए सीमित संख्या में साधकों के लिए ही होगी। नौ दिवसीय संजीवनी साधना सत्र 11 अगस्त से आरम्भ हो रहे हैं। उसके बाद ये पूर्ववत हर माह की 1 से 9, 11 से 19 तथा 21 से 29 तारीखों में अगले निर्धारण तक चलते रहेंगे। उसी प्रकार एक मासीय सत्र 1 सितम्बर 2021 से आरम्भ होंगे और हर माह चलेंगे।

परिस्थितियाँ बदली हुई हैं। साधकों के लिए आवश्यक शर्तें भी कड़ी हैं। बिना पूर्व स्वीकृति के किसी को भी प्रवेश नहीं दिया जाएगा। स्वीकृति प्राप्त साधकों को शिविर आरम्भ होने की पूर्व संध्या पर अनुशासन-संकल्प गोष्ठी में उपस्थित रहना होगा।

पूछताछ और आवेदन के लिए सम्पर्क कीजिए :

शिविर-शिक्षण विभाग, शान्तिकुञ्ज : ऑनलाइन आवेदन awgp.org/shivir
फोन : 9258369749, 9258369485 ई-मेल : shivir@awgp.org

कृपया ध्यान दीजिए :

- यह कोरोना संक्रमण काल है। परिस्थितियाँ कभी भी बदल सकती हैं। अतः समयानुसार नए निर्णय लिए जाते रहेंगे। अभ्यर्थी साधक आने से पूर्व संपर्क अवश्य करें।
- अपने साथ अपना फोटो पहचान पत्र (आधार कार्ड आदि), कोविड के दोनों टीके लगवाने का प्रमाण पत्र, कोरोना नेगेटिव रिपोर्ट अवश्य लेकर आएँ।
- शिविर के समय कोनोरा प्रोटोकॉल का सख़्ती से पालन करना होगा।

आत्मीयता विस्तार के नए अध्याय का शुभारंभ

साधना कक्ष व जोन कार्यालय का उद्घाटन, वृक्षारोपण और देवस्थापनाएँ

नजीबाबाद, बिजनौर। उत्तर प्रदेश

शान्तिकुञ्ज का स्वण जयन्ती वर्ष आत्मीयता विस्तार का वर्ष है। इस वर्ष के आरम्भ में परिजन लगभग 20 लाख नए लोगों तक पहुँचे। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के लगातार प्रवासों ने लोगों के मन-मस्तिष्क पर जादुई प्रभाव छोड़ा। कोरोना संक्रमण काल में यह सिलसिला प्रत्यक्ष न होकर भले ही ऑनलाइन जारी रहा हो, किन्तु अनुकूल अवसर मिलने पर एक लम्बे अन्तराल के बाद अपनों के साथ आत्मीयता विस्तार का यह क्रम पुनः आरम्भ हुआ।

13 जुलाई 2021 को आदरणीय डॉक्टर चिन्मय जी गायत्री शक्तिपीठ नजीबाबाद पहुँचे। उन्होंने वहाँ सप्तऋषि साधना कक्ष एवं जोन कार्यालय का उद्घाटन किया। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य स्मृति उपवन में वृक्षारोपण किया। 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' अभियान के अन्तर्गत नगर के गणमान्यों के घर देवस्थानाएँ कीं। इस प्रवास में अरुण तोमर जी एवं रामअवतार पाटीदार भी उनके साथ थे।

नजीबाबाद की सभा को सम्बोधित करते आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

गायत्री शक्तिपीठ नजीबाबाद पहुँचने पर आदरणीय डॉक्टर चिन्मय पंड्या जी ने माँ गायत्री माता की प्रतिमा पर माल्यार्पण, गुरुसत्ता के स्मारकों पर पुष्पांजलि एवं शिवाभिषेक करने के उपरांत कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित किया।

अपने उद्बोधन में उन्होंने इस विषम समय में हम सभी के दायित्व के ऊपर विशेष रूप से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी के बनाए इस विराट देव परिवार को लक्ष्य पीड़ित मानवता की सेवा करना, उन्हें सन्मार्ग की ओर प्रेरित-प्रोत्साहित करना है। हमारे शिष्यत्व की सार्थकता इसी में है कि हम सब कमरकस परम पूज्य गुरुदेव के सपनों को साकार करने के लिए हर पल तत्पर रहें। इस दिशा में कैसे आगे बढ़ें? अपनी साधना कैसे करें? स्वयं के व्यक्तित्व का विकास कैसे करें? इन सब विषय पर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने परिजनों को संबोधन दिया। नजीबाबाद के गायत्री परिजनों द्वारा कोविड संक्रमण काल में की गई पीड़ित मानवता की सेवा-सहायता को भी उन्होंने सराहा। शान्तिकुञ्ज का आमंत्रण देते हुए उन्होंने कहा कि जब अनुकूल समय हो अपने घर अवश्य पधारें।

इस अवसर पर शक्तिपीठ में उप जोन प्रभारी श्री डी.पी. सिंह, शक्तिपीठ व्यवस्थापक श्री उदय सिंह चौहान, डॉ दीपक कुमार कमल शर्मा, जितेंद्र सिंह, श्रीमती मधुबाला गुप्ता, कामेश शर्मा रहे।

आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने नजीबाबाद स्थित परिजनों के घर देव स्थापना का चित्र एवं गंगाजल स्थापित किया। जिनके घर देवस्थापनाएँ हुईं, उनमें प्रमुख रहे सर्वश्री तरुण राजपूत, कपिल अग्रवाल सर्राफ, राजन टंडन गोल्डी, अवनीश अग्रवाल, कैलाश चन्द्र सिंघल, राजेन्द्र सिंह, छत्रपाल सिंह आदि। स्थानीय एसडीएम श्री परमानंद झा एवं नजीबाबाद के सी.ओ., एस.ओ. से मुलाकात की।

आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार

मुख्यमंत्री के घर देवस्थापना स्थापना हुई

पणजी, गोवा

गायत्री परिवार के परिजन गोवा के मुख्यमंत्री माननीय श्री प्रमोद सावंत के यहाँ देवस्थापना एवं गंगाजली स्थापना करने पहुँचे थे। गंगाजली एवं देवस्थापना चित्र को पाकर गोवा के मुख्यमंत्री जी अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने गायत्री परिवार की सेवाओं का स्मरण करते हुए साधुवाद दिया और गायत्री-गंगा को उनके घर तक पहुँचाने के लिए धन्यवाद दिया। केन्द्रीय पर्यटन राज्य मंत्री श्रीयुत् श्रीपाद नाइक के यहाँ भी गंगाजली और देवस्थापना की गई।

> मैं सौभाग्यशाली हूँ कि मेरे यहाँ गंगाजली के रूप में स्वयं माँ गंगा आई एवं गायत्री माता की स्थापना हुई। इनका आशीर्वाद मुझे जनता की सेवा करने की प्रेरणा और शक्ति प्रदान करेगा।
>
> **- माननीय श्री प्रमोद सावंत (गोवा के मुख्यमंत्री)**

श्रीपाद नाईक के घर भी गंगाजली और देवस्थापना की गई। उन्होंने कहा–

> गायत्री परिवार सबकी सुधबुध लेता है। गायत्री परिवार की नैतिक आधारशिला पर देश का भाग्य उज्ज्वल बनेगा।

देवस्थापना एवं गंगाजली ग्रहण करते मुख्यमंत्री श्री सावंत

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार नीचे लिखे ई-मेल से भेजें-
email : news@awgp.org

Publication date: 27.7.2021
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23